

गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं

गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफआई) वित्तीय सेवाओं तक पहुंच का दायरा बढ़ाने, वित्तीय क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और विविधता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्हें तेजी से बैंकिंग प्रणाली का अनुपूरक माना जा रहा है जो वित्तीय संकट के समय आघातों को सहने और जोखिम को कम करने में सक्षम हैं। जमाराशि स्वीकार करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-डी) के वित्तीय निष्पादन में वर्ष 2010-11 के दौरान सुधार हुआ है जैसा कि इस अवधि में इनके परिचालन लाभ में हुई वृद्धि और व्यय में हुई मामूली गिरावट से प्रतीत होता है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार न करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) के समेकित तुलन पत्र में वृद्धि हुई है लेकिन उनकी कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ में कोई बदलाव नहीं हुआ। वर्ष 2010-11 के दौरान वित्तीय संस्थाओं द्वारा काफी अधिक संसाधन जुटाए गए। ट्रेडिंग आय में सुधार होने के बावजूद, प्राथमिक व्यापारियों (पीडी) के निवल आय में गिरावट हुई और ऐसा होने का मुख्य कारण यह था कि उनके ब्याज व्यय में अनुपात से अधिक वृद्धि हुई और अन्य आय कम हो गए। वित्तीय क्षेत्र में तेजी से होते बदलाव ने विनियामक के समक्ष नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं और विशेष रूप से काफी जटिल एनबीएफआई क्षेत्र के लिए एक उपयुक्त विनियामी सुरक्षात्मक ढांचा तैयार करना मुख्य चुनौती है।

1. परिचय

6.1 भारत में गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफआई) क्षेत्र में कई प्रकार की वित्तीय संस्थाएं हैं जिनमें से प्रत्येक ने वित्तीय क्षेत्र के विकास के किसी विशेष चरण में अपना योगदान दिया है। मोटे तौर पर, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं (एआईएफआई) भारत में विकास आयोजना का एक नतीजा है और इन संस्थाओं को लंबी अवधि के लिए वित्त प्रदान करने के प्रयोजन से बनाया गया था। दूसरी ओर, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) अधिकांशतः निजी क्षेत्र की संस्थाएं हैं जो कई प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराती हैं जिनमें उपस्कर पट्टेदारी, किराया खरीद, उधार और निवेश शामिल हैं। वर्ष 1995 में अस्तित्व में आए प्राथमिक व्यापारियों (पीडी) ने प्राथमिक और द्वितीयक दोनों सरकारी प्रतिभूति बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि वित्तीय संस्थाओं, एनबीएफसी और प्राथमिक व्यापारियों को सामान्य रूप से एनबीएफआई क्षेत्र में समूहबद्ध किया गया है, तथापि अपने परिचालन की प्रकृति के अनुसार वे एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। तीन तरह के इन एनबीएफआई के लिए विनियामी फोकस भी अलग-अलग होता है। इन संस्थाओं का कारोबारी परिचालन और वित्तीय कार्यनिष्पादन मुख्य रूप से उस क्षेत्र विशेष के कारकों से निर्देशित होता है।

6.2 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां विविध प्रकार के कार्य करती हैं और व्यक्तियों, कॉर्पोरेट तथा संस्थागत ग्राहकों को विभिन्न वित्तीय सेवाएं प्रदान करती हैं। वे कई ऐसे क्षेत्रों में ऋण की कमी पूरी करने में मदद करती आ रही हैं जहां बैंक जैसी संस्थाएं पहुंचने में असमर्थ हैं। वित्तीय समावेशन के बढ़ते महत्व को देखते हुए विशेष रूप से लघु उद्योग और रिटेल क्षेत्र में एनबीएफसी को महत्वपूर्ण वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं के रूप में देखा जाने लगा है। इन संस्थाओं को अभिशासित करने वाले विनियमन बैंकों की तुलना में कम कठोर हैं क्योंकि बैंकों की भांति उन पर विशेष विनियमन मानदंड लागू नहीं होते। जमाराशि लेने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों पर बैंकों की भांति कोई नकदी आरक्षित अनुपात (सीआरआर) लागू नहीं है, लेकिन उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे अपनी सार्वजनिक जमाराशि देयताओं का 15 प्रतिशत चलनिधि आस्ति के रूप में सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश करें। उनकी सार्वजनिक जमाराशि को बीमा कवर प्राप्त नहीं है। एनबीएफसी को रिजर्व बैंक से पुनर्वित्त सुविधा प्राप्त नहीं है और न ही वे जमाराशि पर चेक जारी कर सकते हैं और इस प्रकार वे भुगतान और निपटान प्रणाली का हिस्सा नहीं हैं।

6.3 वर्ष 2006 से गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को इस आधार पर पुनः वर्गीकृत किया गया कि क्या वे किसी उत्पादक आस्ति के सृजन में शामिल हैं या नहीं। नए वर्गीकरण के तहत, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को तीन प्रमुख श्रेणियों में बांटा गया है, नामतः आस्ति वित्त कंपनी, ऋण कंपनी और निवेश कंपनी। बुनियादी ढांचा क्षेत्र में वित्त के बढ़ते महत्त्व को समझते हुए इस क्षेत्र से जुड़ी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की एक चौथी श्रेणी नामतः बुनियादी ढांचा वित्त कंपनी (आईएफसी) की शुरुआत फरवरी 2010 में हुई। इसके बाद, जनवरी 2011 में कंपनियों की एक श्रेणी नामतः प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार न करनेवाली कोर निवेश कंपनियों (सीआईसी एनडी-एसआई) को रिजर्व बैंक के विनियमन और पर्यवेक्षण के तहत लाया गया।

6.4 हाल तक, जमाराशि स्वीकार न करनेवाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों पर न्यूनतम विनियमन लागू थे क्योंकि वे जमाराशि नहीं लेने वाले निकाय थीं और ऐसा माना जाता था कि वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में उनसे अधिक खतरा नहीं है। तथापि, इस श्रेणी के बढ़ते महत्त्व और बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के साथ इनकी अंतर्संबद्धता को समझते हुए 1 अप्रैल 2007 से जमाराशि स्वीकार न करने वाली ऐसी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों पर पूंजी पर्याप्तता और एक्सपोजर मानदंड लागू किए गए जो बड़े और प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण थे (अर्थात् जिनका आस्ति आकार 100 करोड़ रुपए और इससे अधिक है); इन संस्थाओं को प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण एनबीएफसी-एनडी के रूप में अभिहित किया गया।

6.5 इस अध्याय में 2010-11 के दौरान एनबीएफआई के इन प्रत्येक प्रकारों के वित्तीय निष्पादन तथा सुदृढ़ता संकेतक का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय को चार भागों में विभाजित किया गया है। भाग 2 में वित्तीय संस्थाओं के वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। भाग 3 में एनबीएफसी-डी और एनबीएफसी-एनडी-एसआई के वित्तीय निष्पादन की चर्चा की गयी है। भाग 4 में प्राथमिक तथा द्वितीयक बाजारों में प्राथमिक व्यापारियों के कार्यनिष्पादन का विश्लेषण किया गया है तथा भाग 5 में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

2. वित्तीय संस्थाएं

6.6 मार्च 2011 के अंत में, रिजर्व बैंक के विनियमन के अंतर्गत पांच वित्तीय संस्थाएं अर्थात् एक्विजम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी

तथा आईआईबीआई थीं। इनमें से वित्तीय चार संस्थाएं (अर्थात् एक्विजम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी तथा सिडबी) रिजर्व बैंक के पूर्णतः विनियमन और पर्यवेक्षण के अधीन हैं। 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार आईआईबीआई स्वैच्छिक समापन की प्रक्रिया में है। रिजर्व बैंक ने सितंबर 2010 में नाबार्ड में अपनी 71.5 प्रतिशत पूंजीगत स्टोक होल्डिंग भारत सरकार को हस्तांतरित कर दी (सारणी VI.1)। भारत सरकार ने अप्रैल 2010 में एनएचबी में रिजर्व बैंक के स्वामित्व और शेयरहोल्डिंग को भारत सरकार को हस्तांतरित करने में अपनी सहमति दी और इस बात पर भी सहमति दी कि आवास वित्त कंपनियों के पंजीकरण और विनियामक कार्यकलापों को एनएचबी से रिजर्व बैंक के पास हस्तांतरित किया जाए और पर्यवेक्षण संबंधी कार्यकलाप एनएचबी के पास रहें।

6.7 वर्ष 2010-11 के दौरान, एनएचबी और एक्विजम बैंक द्वारा उधार की समग्र अपेक्षा को पूरा करने में हो रही मुश्किलों को देखते हुए 'उधार लेने की उनकी कुल सीमा' को एक वर्ष के लिए उनकी निवल स्वाधिकृत निधि (एनओएफ) के 10 गुणे से बढ़ाकर एनओएफ के 11 गुणा कर दिया गया (एनएचबी के लिए 30 सितंबर 2011 और एक्विजम बैंक के लिए 31 मार्च 2012 तक) और यह समीक्षा के अधीन था। इसके अलावा एनएचबी, सिडबी और एक्विजम बैंक के अल्पावधि उधार की अपेक्षा को पूरा करने में हो मुश्किलों को देखते हुए एक वर्ष के लिए अर्थात् 30 जून 2012 तक 'अम्ब्रेला सीमा' के तहत उनकी उधार की सीमा को उनके निवल स्वाधिकृत निधि (एनओएफ) के 100 प्रतिशत से बढ़ाकर एनओएफ के 150 प्रतिशत कर दिया गया और

सारणी VI.1: वित्तीय संस्थाओं के स्वामित्व का स्वरूप

(31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार)

संस्था	स्वामित्व	प्रतिशत
1	2	3
एक्विजम बैंक	भारत सरकार	100
नाबार्ड*	भारत सरकार	99
	भारतीय रिजर्व बैंक	1
एनएचबी	भारतीय रिजर्व बैंक	100
सिडबी**	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	72.2
	बीमा कंपनियां	21.4
	वित्तीय संस्थाएं	6.4

* भारत सरकार के दिनांक 16 सितंबर, 2010 की अधिसूचना के अनुसार 16 सितंबर, 2010 से नाबार्ड की शेयरधरता में भारत सरकार और रिजर्व बैंक की हिस्सेदारी क्रमशः 99% और 1% है।

** सिडबी में आईडीबीआई बैंक लिमिटेड (19.2 प्रतिशत), भारतीय स्टेट बैंक (15.2 प्रतिशत), और भारतीय जीवन बीमा निगम (14.4 प्रतिशत) तीन बड़े शेयरधारक हैं।

यह समीक्षा के अधीन था। बैंकों को अग्रिम, अग्रिम पुनर्निर्धारण, निवेश संविभाग आदि के संबंध में आय निर्धारण, आस्ति वर्गीकरण और प्रावधानीकरण पर जारी किए गए विवेकपूर्ण मानदंड दिशानिर्देशों को चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं पर भी लागू किया गया।

वित्तीय संस्थाओं के कार्यकलाप

6.8 2010-11 के दौरान वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता में थोड़ी गिरावट हुई। ऐसा निवेश संस्थाओं विशेष रूप से भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा की गई स्वीकृति और संवितरण में आई गिरावट के चलते हुआ (सारणी VI.2 और परिशिष्ट सारणी VI.1)।

वित्तीय संस्थाओं की आस्तियां और देयताएं

6.9 2010-11 के दौरान वित्तीय संस्थाओं के समेकित तुलनपत्रों में विस्तार हुआ। देयता पक्ष में, 'बांडों तथा डिबेंचरों' के साथ जमाराशियां उधार की प्रमुख स्रोत रहीं। तथापि, 'अन्य स्रोतों' से जुटाए गए संसाधनों में गिरावट देखी गई। आस्ति पक्ष में, उधार तथा अग्रिम एकल बड़े घटक बने रहे जिनका वित्तीय संस्थाओं की कुल आस्तियों में हिस्सा चार बटा पांच था और 2010-11 में इसमें 16.6 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई (सारणी VI.3)।

वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए संसाधन

6.10 वित्तीय संस्थाओं द्वारा वर्ष 2010-11 के दौरान पिछले वर्ष के मुकाबले काफी अधिक संसाधन जुटाए गए। वर्ष 2010-11 में पिछले वर्ष के मुकाबले सभी घटकों दीर्घावधि, अल्पावधि और विदेशी मुद्रा संसाधनों में तेज वृद्धि देखी गई। चारों वित्तीय संस्थाओं में एनएचबी ने

सबसे अधिक संसाधन जुटाए जिसके बाद नाबार्ड, एक्जिम बैंक और सिडबी का क्रम आता है (सारणी VI.4)।

6.11 वित्तीय संस्थाओं ने विभिन्न लिखतों जैसे वाणिज्यिक पत्र (सीपी), जमा प्रमाणपत्र (सीडी) तथा मीयादी जमाराशियों के माध्यम से मुद्रा बाजार से संसाधन जुटाए। 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं द्वारा वाणिज्यिक पत्र के माध्यम से जुटाए गए संसाधनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई (सारणी VI.5)। इसके परिणामस्वरूप, 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं द्वारा मुद्रा बाजार से जुटाए गए कुल संसाधनों में 70 प्रतिशत से अधिक हिस्से के साथ वाणिज्यिक पत्र सबसे महत्वपूर्ण एकल माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया। वित्तीय संस्थाओं को अधिदेश है कि वे स्वीकृत समग्र सीमा के अंतर्गत संसाधन जुटाएं। यद्यपि 2010-11 में सिडबी द्वारा मुद्रा बाजार से 8,137 करोड़ रुपए के कुल संसाधन जुटाए गए, तब भी वर्ष के दौरान किसी भी समय इस लिखत के तहत बकाया राशि समग्र सीमा से अधिक नहीं हुई। चूंकि वाणिज्यिक पत्र मुद्रा बाजार की एक अल्पावधि लिखत है, इसलिए वर्ष के दौरान वित्तीय संस्थाएं अक्सर इसके जरिए संसाधन जुटाती रहीं, जिसके चलते वाणिज्यिक पत्र के माध्यम से जुटायी गयी संचयी राशि का स्तर उच्चतर था।

निधियों के स्रोत तथा उपयोग

6.12 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं की निधियों के स्रोत/अभिनियोजन में थोड़ी गिरावट आई। वित्तीय संस्थाओं ने आंतरिक रूप से अधिक निधियां जुटाईं और इसके बाद बाह्य स्रोतों का स्थान आता है। वित्तीय संस्थाओं की निधियों में 'अन्य स्रोतों' का भाग काफी कम है। मुख्य रूप से वैश्विक वित्तीय बाजार में व्याप्त अनिश्चितता

सारणी VI.2: वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और संवितरित वित्तीय सहायता

(राशि करोड़ रुपए में)

श्रेणी	राशि				घटबढ़ प्रतिशत	
	2009-10		2010-11		2010-11	
	स्वी	संवि	स्वी	संवि	स्वी	संवि
1	2	3	4	5	6	7
(i) अखिल भारतीय सावधि ऋणदात्री संस्थाएं*	42,552	37,987	55,432	47,224	30.3	24.3
(ii) विशेषीकृत वित्तीय संस्थाएं#	590	320	882	509	49.5	59.1
(iii) निवेश संस्थाएं@	63,637	53,762	45,155	40,231	-29.0	-25.2
एफआई द्वारा कुल सहायता (i+ii+iii)	106,779	92,069	101,469	87,964	-5.0	-4.5

स्वी: स्वीकृत। संवि: संवितरित * : आईएफसीआई, सिडबी और आईआईबीआई के संबंध में।

@ : एलआईसी और जीआईसी तथा भूतपूर्व सब्सिडियरी (एनआईए, यूआईआईसी और ओआईसी) के संबंध में।

टिप्पणी: सभी आंकड़े अर्न्तम है।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

: आईवीसीएफ: आईसीआईसीआई वेंचर और टीएफसीआई के संबंध में।

सारणी VI.3: वित्तीय संस्थाओं की देयताएं और आस्तियां

(मार्च के अंत में)

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	2010	2011	घटबढ़ प्रतिशत
1	2	3	4
देयताएं			
1. पूंजी	4,600 (1.8)	4,900 (1.7)	6.5
2. आरक्षित निधि	39,556 (15.9)	42,612 (14.7)	7.7
3. बांड और डिबेंचर	71,011 (28.5)	90,097 (31.0)	26.9
4. जमाराशियां	79,472 (31.9)	92,782 (31.9)	16.7
5. उधार राशियां	35,307 (14.2)	42,681 (14.7)	20.9
6. अन्य देयताएं	19,037 (7.6)	17,544 (6.0)	-7.8
कुल देयताएं/आस्तियां	2,48,983	2,90,616	16.7
आस्तियां			
1. नकद और बैंक शेष	3,694 (1.5)	5,814 (2.0)	57.4
2. निवेश	8,676 (3.5)	11,802 (4.1)	36.0
3. ऋण और अग्रिम	2,14,671 (86.2)	2,50,238 (86.1)	16.6
4. भुनाए/पुनर्भुनाए गए बिल	2,668 (1.1)	3,542 (1.2)	32.8
5. अचल आस्तियां	553 (0.2)	537 (0.2)	-2.7
6. अन्य आस्तियां	18,722 (7.5)	18,682 (6.4)	-0.2

टिप्पणी: i. ये आंकड़े चार एफआई यथा - एक्जिम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी के हैं।
ii. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल देयताओं/आस्तियों के प्रति प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत: i. संबंधित एफआई के तुलनपत्र। ii. 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार एनएचबी की गैर लेखापरीक्षित ऑफ-साइट विवरणियां।

के चलते 2010-11 में एक ओर जहां आंतरिक स्रोतों से जुटाई गई निधियों में वृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर बाह्य स्रोतों में गिरावट आई। जुटाई गई निधियों के अधिकांश भाग का उपयोग नए अभिनियोजन के

सारणी VI.5: वित्तीय संस्थाओं द्वारा मुद्रा बाजार से जुटाए गए संसाधन

(मार्च 2011 के अंत में)

(राशि करोड़ रुपए में)

लिखत	नाबार्ड	सिडबी@	एनएचबी	एक्जिम	कुल
1	2	3	4	5	6
क. कुल	7,103	8,137	2,621	1,538	19,398
i) सावधि जमाराशियां	48	2,179	249	71	2,548
ii) सावधि मुद्रा	110	-	-	-	110
iii) अंतर-कारपोरेट जमाराशियां	-	-	-	-	-
iv) जमा प्रमाणपत्र	137	-	-	4	141
v) वाणिज्यिक पत्र	6,448	5,958	0.0	1,462	13,867
vi) बैंकों से अल्पावधि ऋण	360	-	2,372	-	2,732
ख. अब्जला सीमा	12,675	5,610	3,277	4,408	
ग. अब्जला सीमा का उपयोग ('ख' के प्रतिशत के रूप में 'क')	56.0	145.1	7.6	60.1	

- : शून्य/नगण्य

स्रोत: वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए संसाधन संबंधी पाक्षिक विवरणी।

लिए किया गया और इसके बाद इससे पुराने उधारियों की चुकौती की गई। वित्तीय संस्थाओं द्वारा इस निधि के कुछ ही भाग का उपयोग ब्याज भुगतान के लिए किया गया। वर्ष के दौरान अन्य अभिनियोजन में तेज वृद्धि दर्ज की गई, जबकि पिछले उधारियों की चुकौती में गिरावट देखी गई (सारणी VI.6)।

उधार लेने और देने की लागत और परिपक्वता

6.13 जुटाए गए रुपया संसाधनों की औसत भारित लागत में हर स्तर पर वृद्धि हुई (सारणी VI.7)। वर्ष के दौरान एनएचबी को छोड़कर वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए रुपया संसाधनों की औसत भारित परिपक्वता में भी वृद्धि हुई। एनएचबी ने वर्ष के दौरान अपनी

सारणी VI.4: वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए संसाधन

(राशि करोड़ रुपए में)

संस्था	जुटाए गए कुल संसाधन								कुल बकाया	
	दीर्घावधि		अल्पावधि		विदेशी मुद्रा		कुल		(मार्च के अंत में)	
	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
एक्जिम बैंक	8,150	11,132	5,052	1,538	5,193	11,083	18,395	23,752	40,509	47,192
नाबार्ड	16	9,741	12,330	18,532	-	-	12,346	28,273	24,922	33,891
एनएचबी	7,518	7,538	10,306	29,458	-	-	17,824	36,996	10,598	10,918
सिडबी	13,253	9,977	11,500	2,285	987	1,226	25,740	13,489	30,186	34,090
कुल	28,937	38,388	39,188	51,813	6,180	12,309	74,305	1,02,510	1,06,215	1,26,091

- : शून्य/नगण्य

टिप्पणी: दीर्घावधि रुपया संसाधनों में बांड/डिबेंचर से जुटाई गई उधार राशियां सम्मिलित हैं; और अल्पावधि संसाधनों में सीपी, सावधि जमाराशियां, आईसीडी, सीडी और सावधि मुद्रा से प्राप्त उधार राशियां सम्मिलित हैं। विदेशी मुद्रा संसाधनों में आम तौर पर अंतरराष्ट्रीय बाजार के बांड और उधार राशियां सम्मिलित हैं।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

मूल उधार दर (पीएलआर) में वृद्धि किया, जबकि एक्विजम बैंक और सिडबी ने इसमें कोई बदलाव नहीं किया (सारणी VI.8)।

वित्तीय संस्थाओं का वित्तीय निष्पादन

6.14 वर्ष 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं के परिचालनिक लाभ और निवल लाभ में कमी के चलते उनके वित्तीय निष्पादन में गिरावट हुई। वर्ष के दौरान मुख्य रूप से वेतन संशोधन के चलते परिचालनिक खर्चों में तेज वृद्धि हुई। तथापि, वित्तीय संस्थाओं के ब्याज आय में 15.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी VI.9)। चारों वित्तीय संस्थाओं में से एक्विजम बैंक के मामले में आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) सबसे अधिक बना रहा जिसके बाद एनएचबी और सिडबी का स्थान था (सारणी VI.10)।

सुदृढ़ता के संकेतक: आस्ति गुणवत्ता

6.15 2010-11 में समग्र स्तर पर वित्तीय संस्थाओं की निवल अनर्जक आस्तियों की राशि में पिछले वर्ष के मुकाबले वृद्धि हुई। निवल अनर्जक आस्तियों में हुई वृद्धि केवल सिडबी के कारण थी, जबकि

सारणी VI.6: वित्तीय संस्थाओं की निधियों के स्रोतों और नियोजन की प्रवृत्ति (मार्च 2011 के अंत में)

मद	(राशि करोड़ रुपए में)		
	2010	2011	घटबढ़ प्रतिशत
1	2	3	4
क. निधियों का स्रोत (i+ii+iii)	3,02,610	2,97,784	-1.6
	(100)	(100)	
(i) आंतरिक	1,56,733	1,63,197	4.1
	(51.8)	(54.8)	
(ii) बाह्य	1,26,813	1,19,072	-6.1
	(41.9)	(40.0)	
(iii) अन्य@	19,065	15,515	-18.6
	(6.3)	(5.2)	
ख. निधियों का नियोजन (i+ii+iii)	3,02,610	2,97,784	-1.6
	(100)	(100)	
(i) नए नियोजन	1,71,922	1,74,674	1.6
	(56.8)	(58.7)	
(ii) भूतकाल की उधार राशियों की चुकौती	1,15,015	83,971	-27.0
	(38.0)	(28.2)	
(iii) अन्य नियोजन	15,673	39,139	149.7
	(5.2)	(13.1)	
जिनमें से:			
ब्याज का भुगतान	16,561	14,227	-14.1
	(5.5)	(4.8)	

टिप्पणी: एक्विजम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी।

@: बैंकों के पास रखी नकदी और शेष, रिजर्व बैंक और अन्य बैंकों के पास रखी शेष राशियां सम्मिलित हैं। कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल के प्रति प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

सारणी VI.7: चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं द्वारा जुटाए गए रुपया संसाधनों की भारत औसत लागत और परिपक्वता

संस्था	औसत लागत (प्रतिशत)		भारत औसत परिपक्वता (वर्ष)	
	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5
एक्विजम बैंक	7.1	8.4	1.9	2.9
सिडबी	6.0	7.0	2.4	2.5
नाबार्ड	4.4	7.1	0.3	1.1
एनएचबी	6.2	7.2	4.7	2.5

टिप्पणी: आंकड़े अनंतिम हैं।

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

नाबार्ड के मामले में थोड़ी गिरावट हुई। यदि चारों वित्तीय संस्थाओं को उनकी निवल अनर्जक आस्तियों के आरोही क्रम में रखा जाए तो सिडबी सबसे अधिक निवल अनर्जक आस्तियों के साथ शीर्ष पर होगा जबकि शून्य एनपीए के साथ एनएचबी सबसे नीचे होगा। इसके अलावा, सिडबी का अनर्जक आस्ति अनुपात (निवल उधारियों के प्रतिशत के रूप में एनपीए) सबसे अधिक था जिसके बाद एक्विजम बैंक का स्थान आता है। (सारणी VI.11 और चार्ट VI.1)

6.16 एक्विजम बैंक के अवमानक आस्तियों में काफी अधिक वृद्धि हुई। तथापि, वर्ष के दौरान संदिग्ध और हानि वाली आस्तियां कम हुईं। नाबार्ड के मामले में, अवमानक आस्तियां शून्य स्तर तक आ गईं, लेकिन उनकी संदिग्ध आस्तियों में वृद्धि हुई। वर्ष के दौरान सिडबी की अवमानक और संदिग्ध आस्तियों में काफी अधिक वृद्धि हुई। 2010-11 में चारों वित्तीय संस्थाओं की अवमानक आस्तियों को एक-साथ मिलाकर देखने पर उनकी अवमानक आस्तियों में तेज वृद्धि दिखती है (सारणी VI.12)।

पूंजी पर्याप्तता

6.17 2010-11 में एनएचबी और सिडबी के मामले में सीआरएआर के अनुसार उनके पूंजी पर्याप्तता में वृद्धि हुई, जबकि एक्विजम बैंक और नाबार्ड के पूंजी पर्याप्तता में गिरावट हुई। तथापि, यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वित्तीय संस्थाओं का सीआरएआर

सारणी VI.8: चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं की दीर्घवधि पीएलआर संरचना (प्रतिशत)

प्रभावी	एनएचबी	एक्विजम बैंक	सिडबी
1	2	3	4
मार्च 2010	10.25	14.00	11.00
मार्च 2011	10.50	14.00	11.00

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं।

सारणी VI.9: चुनिंदा अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं का वित्तीय निष्पादन

(राशि करोड़ रूप में)

1	2009-10		2010-11		घटबढ़	
	कुल	कुल	राशि	प्रतिशत		
2	3	4	5			
क. आय	15,624	17,965	2,340	15.0		
अ) ब्याज आय	15,147 (96.9)	17,485 (97.3)	2,338	15.4		
आ) गैर-ब्याज आय	478 (3.1)	480 (2.7)	2.4	0.5		
ख. व्यय	10,492	13,337	2,846	27.1		
अ) ब्याज व्यय	9,611 (91.6)	11,862 (88.9)	2,251	23.4		
आ) परिचालन व्यय	880 (8.4)	1,475 (11.1)	595	67.6		
जिनमें से: वेतन बिल	468	1,095	627	134.1		
ग. करधान के लिए प्रावधान	1,559	1,255	-304	-19.5		
घ. लाभ						
परिचालन लाभ (पीबीटी)	4,332	3,808	-524	-12.1		
निवल लाभ (पीएटी)	2,773	2,554	-219	-7.9		
ड. वित्तीय अनुपात @						
परिचालन लाभ	1.9	1.4				
निवल लाभ	1.2	0.9				
आय	6.7	6.7				
ब्याज आय	6.5	6.5				
अन्य आय	0.2	0.2				
व्यय	4.5	4.9				
ब्याज व्यय	4.1	4.4				
अन्य परिचालन व्यय	0.4	0.5				
वेतन बिल	0.2	0.4				
प्रावधान	0.7	0.5				
स्प्रेड (विशुद्ध ब्याज आय)	2.4	2.1				

@: औसत कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल आय/व्यय में प्रतिशत हिस्सा दर्शाते हैं।

स्रोत: i) संबंधित एफआई के वार्षिक लेखा विवरण।

ii) 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखा परीक्षित/गैर-लेखा परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां।

iii) 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार एनएचबी की गैर-लेखा परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां।

निर्धारित न्यूनतम 9 प्रतिशत के मानदंड से काफी अधिक था (सारणी IV.13)। विशेष रूप से सिडबी का सीआरएआर अधिक था जो इस

सारणी VI.11: वित्तीय संस्थाओं की निवल अनर्जक आस्तियां
(मार्च 2011 के अंत में)

(राशि करोड़ रूप में)

संस्था	निवल अनर्जक आस्तियां	
	2010	2011
1	2	3
एक्जिम बैंक	78	93
नाबार्ड	33	30
एनएचबी*	-	-
सिडबी	69	132
सभी वित्तीय संस्थाएं (एफआई)	180	255

- : शून्य/नगण्य

*: ऑसमॉस विवरणियों के अनुसार जून के अंत में स्थिति।

स्रोत: 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखा-परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां और 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार एनएचबी की गैर-लेखा परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां।

बात का संकेत देता है कि इस पूंजी का उपयोग ऋण के और आगे विस्तार हेतु करने की गुंजाइश है।

3. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

6.18 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को उनकी देयताओं के प्रकार, उनके द्वारा किए जा रहे कार्यकलापों के प्रकार और प्रणालीगत रूप से उनके महत्वपूर्ण होने के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। देयताओं के आधार पर इनकी दो श्रेणियां हैं- (i) श्रेणी 'क' कंपनियां (सार्वजनिक जमाराशि स्वीकार और धारण करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां अर्थात् एनबीएफसी-डी) और (ii) श्रेणी 'ख' कंपनियां (सार्वजनिक जमाराशि स्वीकार न करने वाली और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां अर्थात् एनबीएफसी-एनडी)। एनबीएफसी-डी पर पूंजी पर्याप्तता आवश्यकता, चलनिधि आस्ति बनाए रखना, एक्सपोजर मानदंड (जिसमें भूमि, भवन और निर्दिष्ट भाववाले शेयरों में निवेश पर प्रतिबंध शामिल है), आस्ति देयता प्रबंधन और रिपोर्टिंग

सारणी VI.10: वित्तीय संस्थाओं के चुनिंदा वित्तीय मानदंड

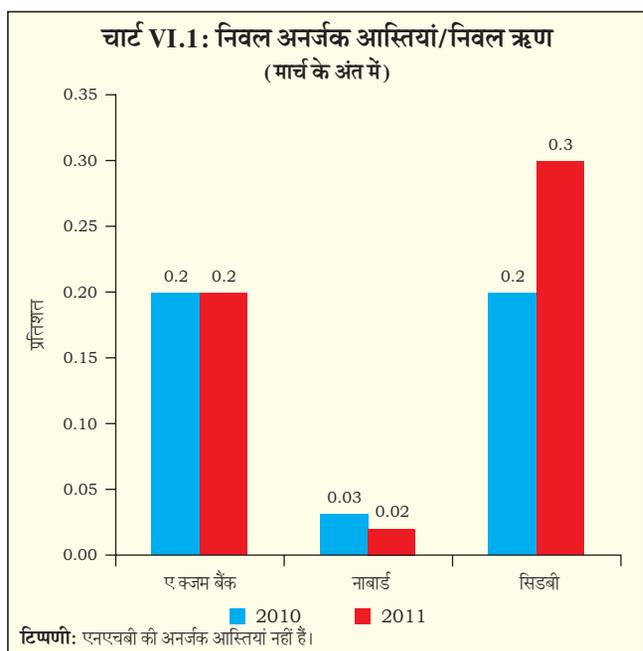
(मार्च 2011 के अंत में)

(प्रतिशत)

संस्था	ब्याज आय/औसत कार्यकारी निधि		गैर-ब्याज आय/औसत कार्यकारी निधि		परिचालनात्मक लाभ/औसत कार्यकारी निधि		औसत आस्ति पर प्रतिलाभ		प्रति कर्मचारी निवल लाभ (करोड़ रूप में)	
	2010	2011	2010	2011	2010	2011	2010	2011	2010	2011
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
एक्जिम बैंक	6.28	6.54	0.29	0.46	1.75	2.21	1.13	1.15	2.21	2.39
नाबार्ड	6.19	6.22	0.10	0.10	1.80	1.25	1.23	0.88	0.33	0.27
एनएचबी*	7.27	7.74	0.17	0.04	2.14	1.72	1.35	1.11	3.15	3.21
सिडबी	8.42	8.11	0.62	0.35	4.32	3.00	1.15	1.09	0.41	0.50

*: जून 2011 के अंत की स्थिति के अनुसार।

स्रोत: वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत विवरण।



आवश्यकताएं लागू हैं। एनबीएफसी-एनडी न्यूनतम विनियमन के अधीन हैं क्योंकि वे ऐसी निकायें हैं जो जमाराशि स्वीकार नहीं करती हैं और उन्हें वित्तीय स्थिरता के लिए कम खतरे के रूप में देखा जाता है। तथापि, इस खंड के बढ़ते महत्व और बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के साथ इनके अंतर्संबद्धों को पहचानते हुए (बॉक्स VI.1) जमाराशि स्वीकार न करने वाली बड़ी और प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों पर 1 अप्रैल 2007 से पूंजी पर्याप्तता, एक्सपोजर मानदंड, एएलएम प्रबंधन और रिपोर्टिंग आवश्यकता लागू किए गए; ऐसी संस्थाओं को प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी-एनडी के रूप में परिभाषित किया गया।

6.19 कार्यकलाप के आधार एनबीएफसी को पांच श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: (i) ऋण कंपनियां (एलसी); (ii) निवेश कंपनियां (आईसी); (iii) आस्ति वित्त कंपनियां (एएफसी); (iv)

सारणी VI.13: चुनिंदा वित्तीय संस्थाओं की जोखिम (भारत) आस्ति की तुलना में पूंजी अनुपात (मार्च 2011 के अंत में)

संस्था	(प्रतिशत)	
	2010	2011
1	2	3
एक्जिम बैंक	18.5	17.2
नाबार्ड	24.9	21.8
एनएचबी *	19.6	20.5
सिडबी	30.2	31.6

*: ऑसमॉस विवरणियों के अनुसार जून अंत की स्थिति।

स्रोत: 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखा-परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां और 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार एनएचबी की गैर-लेखा परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां।

बुनियादी ढांचा वित्त कंपनियां (आईएफसी) और (v) प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण कोर निवेश कंपनियां (सीआईसी-एनडी-एसआई)। ऐसी कंपनियां जिनके आस्ति का आकार 100 करोड़ रुपए या इससे अधिक था और जिनका मुख्य कारोबार केवल ग्रुप प्रतिष्ठानों में स्टेक धारण करने के प्रयोजन से उनमें निवेश करना था तथा जो इन प्रतिभूतियों न ट्रेडिंग करती थीं और न ही जनता से जमाराशि स्वीकार करती थीं, उनके लिए अगस्त 2010 में सीआईसी-एनडी-एसआई नामक एक नई श्रेणी बनाई गई। सीआईसी-एनडी-एसआई के लिए समायोजित नेटवर्थ और लीवरेज सीमा के रूप में एक विनियामक ढांचा लागू किया गया और उन्हें एनओएफ, पूंजी पर्याप्तता और एक्सपोजर मानदंडों से छूट दी गई।

6.20 एनबीएफसी-एनडी-एसआई और साथ ही जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी के स्वामित्व के स्वरूप से मालूम होता है कि ये कंपनियां मुख्य रूप से गैर-सरकारी कंपनियां (प्रकृति के अनुसार पब्लिक लिमिटेड कंपनियां) थीं। मार्च 2011 के अंत में एनबीएफसी-एनडी-एसआई और जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी कंपनियों में गैर-सरकारी कंपनियों का प्रतिशत क्रमशः 97.2 प्रतिशत और 97.0 प्रतिशत था, जबकि सरकारी कंपनियों की

सारणी VI.12: वित्तीय संस्थाओं का आस्ति वर्गीकरण

(राशि करोड़ रुपए में)

संस्था	मानक		अवमानक		संदिग्ध		घाटा	
	2010	2011	2010	2011	2010	2011	2010	2011
1	2	3	4	5	6	7	8	9
एक्जिम बैंक	38,958	45,563	62	197	301	246	50	36
नाबार्ड	1,20,487	1,39,459	7	-	44	68	-	1
एनएचबी *	19,837	22,582	-	-	-	-	-	-
सिडबी	37,892	45,922	75	143	2	136	-	-
सभी वित्तीय संस्थाएं	2,17,173	2,53,525	144	339	347	450	50	37

- : शून्य/नगण्य

*: ऑसमॉस विवरणियों के अनुसार जून 2011 के अंत में स्थिति।

स्रोत: 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एक्जिम बैंक, नाबार्ड और सिडबी की लेखा-परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां और 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार एनएचबी की गैर-लेखा परीक्षित ऑसमॉस विवरणियां।

बॉक्स VI.1: भारत में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और बैंकों के बीच अंतर्संबद्धता

विगत कुछ समय से, बैंक और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों दोनों ही भारत की वित्तीय प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग बन गई हैं। हाल के वैश्विक वित्तीय संकट (2007-09) के आलोक में, बैंकिंग प्रणाली और एनबीएफआई के बीच सांठ-गांठ को लेकर गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं की भूमिका रेखांकित की गई है। सामान्य रूप से, एनबीएफआई बैंकिंग प्रणाली की तुलना में अधिक जोखिम लेने वाली संस्थाओं के रूप में जाने जाते हैं। परंपरागत रूप से, बैंकों के गैर-बैंकिंग क्षेत्रों की ओर बढ़ने संबंधी चर्चा कुछ गतिविधियों, उदाहरणार्थ, बीमा, निवेश बैंकिंग आदि के इर्द-गिर्द घूमती है। बहरहाल, हाल के वैश्विक संकट ने इस चर्चा को आगे ले जाते हुए इसमें एनबीएफआई के साथ बैंकिंग प्रणाली की अंतर्संबद्धता को शामिल कर लिया है क्योंकि अत्यधिक अंतर-संस्थागत एक्सपोजर से वित्तीय प्रणाली को खतरा हो सकता है।

जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी में बैंकों का एक्सपोजर

जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी के मामले में, यह उल्लेख करना प्रासंगिक है, कि मार्च 2011 के अंत में उनकी कुल देयताओं में बकाया सार्वजनिक जमाराशियां घटकर महज लगभग 3.5 प्रतिशत रह गईं, जबकि मार्च 2001 के अंत में ये 20.9 प्रतिशत थीं। जमाराशि स्वीकार करने वाली कंपनियों पर विवेकपूर्ण विनियामक मानदंड कठोर होने के साथ ही सार्वजनिक जमाराशि के बदले मुख्य रूप से उधारियों पर भरोसा बढ़ने लगा। उनकी निधियों के स्रोतों के गहन विश्लेषण से मालूम होता है कि मार्च 2011 के अंत में उनकी कुल देयताओं में (जो मार्च 2001 के अंत में 31.0 प्रतिशत से बढ़ गईं) उनकी कुल उधारियों का हिस्सा लगभग 66.2 प्रतिशत है। महत्वपूर्ण रूप से, उनकी कुल उधारियों का लगभग आधा भाग बैंकों और वित्तीय संस्थाओं से आता है, जो वित्तीय प्रणाली के भीतर गहन वित्तीय अंतर्संबद्धता को दर्शाने के साथ-साथ वित्तीय प्रणाली के उच्च प्रणालीगत जोखिम को भी रेखांकित करता है।

बैंकिंग प्रणाली एनबीएफसी को मिलने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों निधियों के प्रमुख स्रोत प्रतीत होते हैं। हाल तक, एनबीएफसी को सीधे उधार देने में बैंकों को फायदा होता था क्योंकि बैंकों द्वारा इस प्रकार दिए गए ऋण को उनके 'प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र' ऋण में शामिल करने की अनुमति थी। अप्रत्यक्ष रूप से, बैंक एनबीएफसी द्वारा जारी डिबेंचर और वाणिज्यिक पत्र खरीदकर उन्हें निधि प्रदान करते हैं।

एनबीएफसी द्वारा विशेष रूप से बैंकिंग प्रणाली से लिए गए अधिक उधार की वजह से उनकी चलनिधि स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं उठी हैं। ये चिंताएं और भी गंभीर हो जाएंगी यदि संकट या संकट जैसी स्थिति के समय बैंक की खुद की चलनिधि स्थिति तंग हो जाती है।

प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार न करने वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी-एनडी-एसआई)

एनबीएफसी-एनडी में से 100 करोड़ रुपए या इसके अधिक आस्ति आकार वाली बड़ी एनबीएफसी जिन्हें प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) के रूप में परिभाषित किया गया है, वे भी अपने संसाधनों के लिए बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर होते देखे गए। चूंकि ये एनबीएफसी सार्वजनिक जमाराशियां नहीं लेती हैं, इसलिए एनबीएफसी-डी की तुलना में इन पर लागू विनियमन कम कठोर हैं। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, विश्व भर में विनियामकों का ध्यान प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (सिफि) की ओर बढ़ा है। तदनुसार, भारत में भी एनबीएफसी-एनडी-एसआई के विवेकपूर्ण विनियमन को एनबीएफसी-डी के समतुल्य लाने की प्रक्रिया जारी है।

किसी भी स्थिति में, यह समझने करने की जरूरत है कि यदि एनबीएफसी अपने संसाधनों के लिए बैंकिंग प्रणाली पर काफी अधिक निर्भर हो जाते हैं तब इससे संकट के समय न केवल बैंकों पर दबाव बढ़ेगा बल्कि खुद एनबीएफसी के लिए भी खतरा हो सकता है क्योंकि चलनिधि संकट या आसन्न संकट के समय बैंक काफी संवेदनशील हो सकते हैं और या तो वे एनबीएफसी को उधार देने में काफी अनिच्छा दिखाने लगते हैं या चरम स्थिति में वे एनबीएफसी को पूरी तरह उधार देना बंद कर देते हैं जिससे अस्थिरता की स्थिति और भी गंभीर हो सकती है। इस दिशा में हाल का वैश्विक संकट एक संकेतक है।

चूंकि बैंक और एनबीएफसी विनियामक और लागत प्रोत्साहन ढांचे के लिहाज से एक जैसे नहीं होते हैं और एनबीएफसी आगे ऋण देने के लिए बैंकों से उधार लेते हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए कि बैंक के जमाकर्ताओं को अप्रत्यक्ष रूप से किसी अलग-अलग लागत-प्रोत्साहन ढांचे से जोखिम नहीं है, पर्याप्त जांच बिंदू और संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

बैंकिंग प्रणाली से भिन्न, एनबीएफसी पर पूंजी बाजार संबंधी कार्य संपादित करने में कोई अधिकतम सीमा भी नहीं है। इसके अलावा, बैंकिंग क्षेत्र पर लागू विनियमन के मुकाबले एनबीएफसी पर सामान्य तौर पर कम कठोर विनियमन लागू हैं, तथापि विगत कुछ समय से एनबीएफसी पर लागू विनियामक मानदंडों को बैंकिंग प्रणाली के समतुल्य लाने की दिशा में सारगर्भित प्रगति हुई है।

उपर्युक्त के आलोक में, एनबीएफसी द्वारा सार्वजनिक जमाराशि के बदले बैंकिंग प्रणाली से अधिक उधार लेना प्रणालीगत अंतर्संबद्धता के दृष्टिकोण से चिंताजनक प्रतीत होता है।

हिस्सेदारी मार्च 2011 के अंत में केवल क्रमशः 2.8 प्रतिशत और 3.0 प्रतिशत थी (सारणी VI.14)।

गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का प्रोफाइल (आरएनबीसी सहित)

6.21 रिजर्व बैंक के पास पंजीकृत एनबीएफसी की कुल संख्या जून 2011 के अंत में थोड़ी गिरकर 12,409 हो गई (चार्ट VI.2)।

2010-11 में जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-डी) में भी इसी प्रकार का रुझान देखा गया और ऐसा मुख्य रूप से एनबीएफसी के पंजीकरण रद्द किए जाने, एनबीएफसी के जमाराशि लेने के कार्य से अलग हो जाने और जमाराशि लेने वाली एनबीएफसी के जमाराशि न लेने वाली एनबीएफसी में बदल जाने की वजह से हुआ।

सारणी VI.14: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के स्वामित्व का स्वरूप
(31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार)

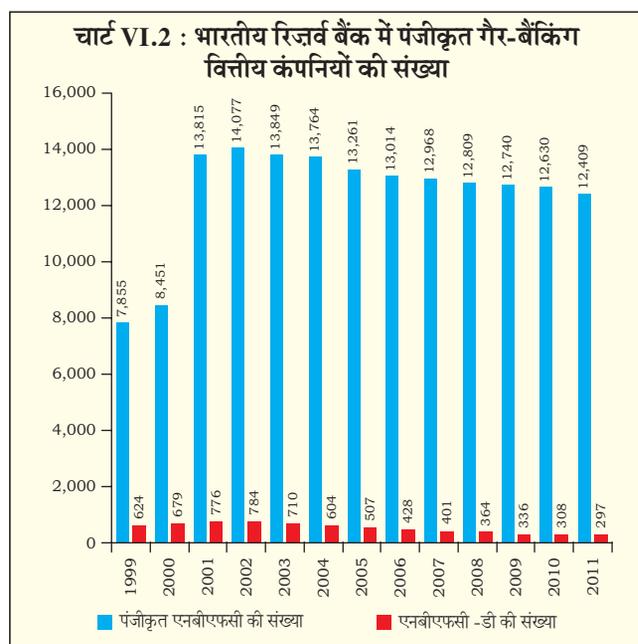
(कंपनियों की संख्या)

स्वामित्व	एनबीएफसी-एनडी-एसआई	जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी
1	2	3
क. सरकारी कंपनियां	9	9
	(2.8)	(3.0)
ख. गैर-सरकारी कंपनियां	310	288
	(97.2)	(97.0)
1. पब्लिक लिमिटेड कंपनियां	181	279
	(56.7)	(93.9)
2. प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां	129	9
	(40.4)	(3.0)
कंपनियों की कुल संख्या (क+ख)	319	297

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े एनबीएफसी की कुल संख्या के प्रतिशत हिस्से हैं।

6.22 एनबीएफसी की संख्या में गिरावट आने के बावजूद, 2010-11 के दौरान उनकी कुल आस्तियों और निवल स्वाधिकृत निधि में वृद्धि दर्ज हुई, जबकि उनकी सार्वजनिक जमाराशियों में गिरावट आई। एनबीएफसी की कुल आस्तियों में अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी) की हिस्सेदारी में 2010-11 के दौरान गिरावट रूझान देखा गया। 2010-11 में आरएनबीसी की निवल स्वाधिकृत निधियों में भी इसी प्रकार का रूझान देखा गया (सारणी VI.15)।

6.23 2010-11 में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (एससीबी) की सकल जमाराशियों की तुलना में एनबीएफसी की सार्वजनिक जमाराशियों के अनुपात में गिरावट दर्ज हुई। इस वर्ष के दौरान एल3 के व्यापक चलनिधि समुच्चय की तुलना में एनबीएफसी की जमाराशि के अनुपात में गिरावट दर्ज हुई (चार्ट VI.3)।



एनबीएफसी-डी का परिचालन (आरएनबीसी को छोड़कर)

6.24 2010-11 के दौरान एनबीएफसी-डी के तुलन पत्र के आकार में 11.9 प्रतिशत की दर से विस्तार हुआ जबकि पिछले वर्ष यह विस्तार 22.2 प्रतिशत था। विस्तार में यह गिरावट दो बड़े एनबीएफसी-डी के एनबीएफसी-एनडी में बदल जाने की वजह से हुआ (सारणी VI.16)। यह उल्लेखनीय है कि एनबीएफसी-डी की कुल देयताओं में उधारियों का हिस्सा लगभग दो-तिहाई है। वर्ष 2010-11 में, एनबीएफसी-डी की सार्वजनिक जमाराशियां, जो क्रेडिट रेटिंग के अधीन हैं (बॉक्स VI.2), में वृद्धि का रुझान बना रहा। एनबीएफसी-डी के आस्ति पक्ष में कुल आस्तियों में उधार एवं अग्रिम लगभग तीन-चौथाई हिस्से के साथ सबसे महत्वपूर्ण भाग बने रहे। इसमें दूसरा बड़ा हिस्सा निवेश का था जिसमें 2010-11 के दौरान मुख्य रूप से गैर-एसएलआर निवेश में कमी के चलते धीमी वृद्धि हुई।

6.25 मार्च 2011 के अंत में एनबीएफसी-डी की कुल आस्तियों में आस्ति वित्त कंपनियों (एएफसी) का हिस्सा सबसे अधिक था (सारणी VI.17)।

एनबीएफसी-डी की जमाराशियों का आकारवार वर्गीकरण

6.26 मार्च 2011 के अंत में 50 करोड़ रुपए से अधिक की जमाराशि आकार वाली एनबीएफसी-डी की जमाराशियों में

सारणी VI.15: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की रुपरेखा

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में			
	2009-10		2010-11अ	
	गैर बैं.वि.कं	जिसमें से: अवशिष्ट गैर बैं.कं.	गैर बैं.वि.कं	जिसमें से: अवशिष्ट गैर बैं.कं.
1	2	3	4	5
कुल आस्तियां	1,12,131	17,919	1,16,897	11,466
		(16.0)		(9.8)
सार्वजनिक जमाराशियां	17,352	14,521	11,964	7,902
		(83.7)		(66.0)
निवल स्वाधिकृत निधियां	16,424	2,921	17,975	2,988
		(17.8)		(16.6)

अ : अर्न्तम

टिप्पणी: 1) गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों में एनबीएफसी-डी और आरएनबीसी शामिल हैं।

2) कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित जोड़ का प्रतिशत हैं।

3) जमाराशि स्वीकार करने वाली 297 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों में से 217 गै.बैं.वि. कंपनियों ने 8 सितंबर 2011 की कट-ऑफ तारीख को मार्च 2011 को समाप्त वर्ष के लिए वार्षिक विवरणियां फाइल की हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

बॉक्स VI.2 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की क्रेडिट रेटिंग -प्रथाएं एवं संभावनाएं

चूंकि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) अपने परिचालन की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग प्रकार की होती हैं, इसलिए रिजर्व बैंक ने विनियामक अनुपालन के लिहाज से उन्हें मोटे तौर पर चार समूहों में वर्गीकृत किया है, नामतः (i) आस्ति वित्त कंपनियां, (ii) ऋण कंपनियां, (iii) निवेश कंपनियां और (iv) बुनियादी ढांचा वित्त कंपनियां। 'वित्तीय कंपनियों पर गठित कार्यदल' (अध्यक्ष: ए.सी. शाह) ने 1992 में जमाराशि लेनेवाली एनबीएफसी के लिए क्रेडिट रेटिंग की सिफारिश की थी। इसके बाद, रिटेल जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा के लिए रिजर्व बैंक ने जनवरी 1998 में एनबीएफसी क्षेत्र के नए विनियामक ढांचे में एनबीएफसी के लिए रेटिंग करवाना अनिवार्य कर दिया।

दी गई क्रेडिट रेटिंग, क्रेडिट रेटिंग एजेंसी (सीआरए) द्वारा लिखतों से जुड़े तुलनात्मक क्रेडिट जोखिम की वर्तमान धारणा का एक सांकेतिक प्रतिबिंब है। यह धारणा जारीकर्ता के कारोबार और वित्तीय जोखिम का विस्तृत मूल्यांकन करने और इस मूल्यांकन का उपयोग अलग-अलग संभावित परिस्थितियों में रेटेड कंपनी के भावी वित्तीय निष्पादन का स्तर और स्थिरता का आकलन करने के बाद तैयार होती है। इस प्रकार क्रेडिट रेटिंग एजेंसी किसी कंपनी विशेष के बारे में कंपनी के भीतर और बाहरी स्रोतों से जो भी जानकारी प्राप्त करती है, उस जानकारी के आधार पर, रेटिंग एजेंसी द्वारा उस कंपनी के विश्लेषण से निकाला गया निष्कर्ष उस कंपनी की क्रेडिट रेटिंग में प्रतिबिंबित होता है।

रेटिंग क्रियाविधि

किसी एनबीएफसी की रेटिंग करने में, क्रेडिट रेटिंग एजेंसी कंपनी के कारोबार और वित्तीय जोखिम का मूल्यांकन करती है और इस मूल्यांकन के जरिए अलग-अलग संभावित परिस्थितियों में उस कंपनी के वित्तीय कार्यनिष्पादन का स्तर और स्थिरता का आकलन करती है। किसी एनबीएफसी के जोखिम के मूल्यांकन का विस्तृत मानदंड निम्न पर आधारित होता है: **कारोबार जोखिम:** (i) परिचालन वातावरण, (ii) स्वामित्व ढांचा, (iii) फ्रेंचाइजी और आकार (iv) प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति, (v) प्रबंधन, प्रणाली एवं रणनीति और (vi) गवर्नेंस ढांचा; **वित्तीय जोखिम:** (i) आस्ति गुणवत्ता, (ii) चलनिधि, (iii) लाभप्रदता और (iv) पूंजी पर्याप्तता।

तथापि, संबंधित कंपनी विशेष की समग्र जोखिम प्रोफाइल में होने वाले संभावित परिवर्तन के अनुसार अलग-अलग कंपनियों में इन सभी मानदंडों का तुलनात्मक महत्त्व अलग-अलग हो सकता है। इसके अलावा, चूंकि इनमें से अधिकांश मानदंड गुणात्मक प्रकृति के होते हैं, इसलिए रेटिंग कंपनियां निर्धारित उप-मानदंडों पर जानकारी जुटाकर और उसका आकलन कर तथा विभिन्न कंपनियों से उसकी तुलना करके व्यक्तिनिष्ठ निर्णय को कम करने का प्रयत्न करती हैं। क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों में एक आम चलन यह रहा है कि वे एनबीएफसी की जोखिम प्रबंधन नीतियों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करती हैं क्योंकि ये मूल्यांकन कंपनी विशेष पर चलनिधि का दबाव, लाभप्रदता और पूंजीकरण के प्रभाव का आकलन जानने में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध कराते हैं।

क्रेडिट रेटिंग एजेंसी एनबीएफसी के पूंजी के स्तर अलावा इनकी पूंजी की गुणवत्ता का भी मूल्यांकन करती है। एनबीएफसी की विनियामक पूंजी पर्याप्तता आवश्यकता पूरा करने की क्षमता का भी मूल्यांकन किया जाता है। ईक्विटी पर काफी अधिक लाभ का आवश्यक रूप से यह अभिप्राय नहीं है कि क्रेडिट रेटिंग ऊंची होगी, क्योंकि अंतर्निहित

जोखिम भी काफी अधिक होगा और ऐसा होने पर यह अधिक अस्थिर हो सकता है या इसका पूर्वानुमान करना मुश्किल हो सकता है।

सभी रेटिंगों पर वैधता की अवधि तक लगातार निगरानी रखी जाती है।

एनबीएफसी की क्रेडिट रेटिंग के लिए विनियामक आवश्यकताएं

भारतीय रिजर्व बैंक ने 31 जनवरी 1998 से जमाराशि लेनेवाली ऐसी सभी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए क्रेडिट रेटिंग करवाना अनिवार्य कर दिया जिनकी निवल स्वाधिकृत निधि 25 लाख रुपए या इससे अधिक है। वर्तमान में, 2 करोड़ रुपए या इससे अधिक एनओएफ वाली एनबीएफसी-डी को वर्ष में कम-से-कम एक बार किसी अनुमोदित क्रेडिट रेटिंग एजेंसी से रेटिंग करवाना आवश्यक है। यह भी अधिदेश दिया गया कि वे 'न्यूनतम निवेश ग्रेड' के बिना जनता से जमाराशि नहीं जुटा सकते हैं और वे रेटिंग की एक प्रति रिजर्व बैंक में प्रस्तुत करें। इसके अलावा, रेटिंग में किसी प्रकार की अपग्रेडिंग और डाउनग्रेडिंग की सूचना भी विनियामक को तत्काल देना आवश्यक है।

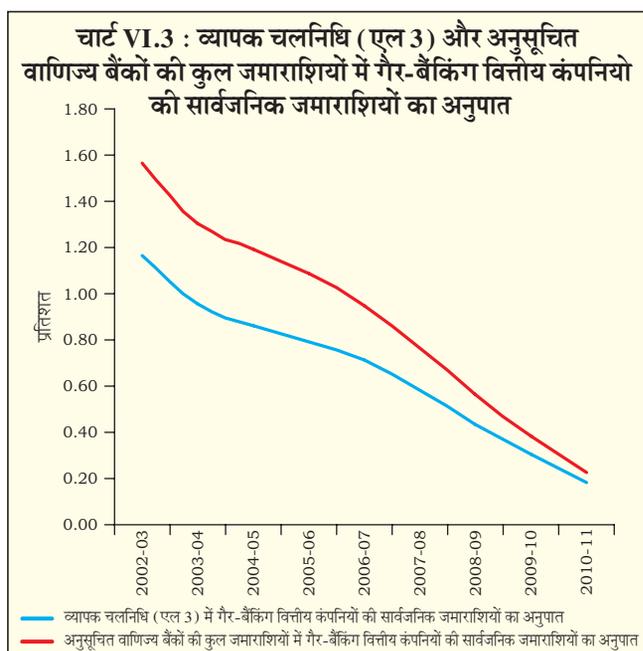
एजेंसी	न्यूनतम ग्रेड
द क्रेडिट रेटिंग इन्फॉर्मेशन सर्विसेज ऑफ इंडिया लिमिटेड (क्रिसिल)	एफ ए - (एफ ए माइनस)
आईसीआरए लिमिटेड	एमए ए - (एम ए माइनस)
क्रेडिट एनालिसिस एंड रिसर्च लिमिटेड (केआर)	केआर बीबीबी (एफडी)
फिच रेटिंग्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	[टीए - (इंड) (एफडी)]

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के क्रेडिट रेटिंग की संभावनाएं

किसी एनबीएफसी द्वारा जुटाई गई जमाराशि की मात्रा को रेटिंग से संबद्ध कर दिया गया है। एनबीएफसी के सीआरएआर को रेटिंग से संबद्ध कर उन्हें किसी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी से रेटिंग करवाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। तदनुसार, अभी तक रेटेडे एनबीएफसी को केवल 12 प्रतिशत सीआरएआर बनाए रखना आवश्यक है, जबकि रेटिंग न हुई एनबीएफसी को 15 प्रतिशत सीआरएआर बनाए रखना है। प्रसंगवश, जमाराशि नहीं लेनेवाली एनबीएफसी भी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी से अपने लिखतों की रेटिंग करवाती हैं, यद्यपि विनियामक ने इनके लिए रेटिंग करवाना अनिवार्य नहीं किया है।

सब-प्राइम वित्तीय संकट के आलोक में, विनियामकों के बीच प्रत्याशा और वास्तविकता, अर्थात् क्रेडिट रेटिंग पर भरोसा और ऐसी रेटिंग की विश्वसनीयता, के बीच संभावित अंतर को लेकर चिंताएं बढ़ी हैं। ये चिंताएं मुख्यतः इस बात को लेकर हैं कि गलत क्रेडिट रेटिंग बाजार आबंटन प्रोत्साहन, लागत ढांचा और प्रतिस्पर्धा को उलट-पुलट कर सकती है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के बीच की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के साथ उनकी व्यापारिक आकांक्षाएं काफी ऊंची प्रतीत होती हैं। क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के विरुद्ध बार-बार होनेवाली सबसे अधिक शिकायत इस बात को लेकर है कि उनमें जवाबदेही नहीं है क्योंकि क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां शुद्धता के लिए कानूनी रूप से जवाबदेही नहीं हैं और गलत रेटिंग होने पर अक्सर वे जवाबदेही से बच जाती हैं। विनियामक और सरकार को इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

संदर्भ: भारतीय रिजर्व बैंक (1992): *वित्तीय कंपनियों पर कार्यदल* (अध्यक्ष: श्री ए.सी.शाह) की रिपोर्ट, भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई।



उल्लेखनीय तेज वृद्धि हुई जिनका कुल जमाराशियों में हिस्सा 90.6 प्रतिशत था। तथापि, इस श्रेणी में आनेवाली एनबीएफसी-डी की

संख्या केवल 8 थी जो एनबीएफसी-डी की कुल संख्या के लगभग 3.7 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती थीं। इस प्रकार, अपेक्षाकृत केवल बड़ी एनबीएफसी-डी कंपनियां जमाराशियों के जरिए संसाधन जुटाने में समर्थ थीं (सारणी VI.18 और चार्ट VI.4)।

एनबीएफसी द्वारा धारित जमाराशियों का क्षेत्रवार संयोजन

6.27 देश के उत्तरी क्षेत्र में एनबीएफसी-डी की संख्या सबसे अधिक थी जो मार्च 2011 के अंत में एनबीएफसी-डी की कुल संख्या के 66.4 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। तथापि, उत्तरी क्षेत्र की एनबीएफसी-डी का जमाराशि आकार, दक्षिणी क्षेत्र में स्थित एनबीएफसी-डी की तुलना में काफी छोटा था, जिसका मार्च 2011 के अंत में जमाराशि में 72.4 प्रतिशत हिस्सा था। 2010-11 में दक्षिणी क्षेत्र में स्थित एनबीएफसी-डी द्वारा धारित जमाराशियों के हिस्से में भी वृद्धि हुई (सारणी VI.19 तथा चार्ट VI.5)।

6.28 महानगरों में, उत्तरी क्षेत्र में नई दिल्ली में एनबीएफसी-डी की संख्या सबसे अधिक थी जबकि दक्षिणी क्षेत्र में एनबीएफसी-डी की

सारणी VI.16: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी का समेकित तुलनपत्र

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में		घट-बढ़ 2009-2010		घट-बढ़ 2010-11 अ	
	2010	2011 अ	संपूर्ण	प्रतिशत	संपूर्ण	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1. प्रदत्त पूंजी+	3,892 (4.1)	3,643 (3.5)	75	2.0	-250	-6.4
2. आरक्षित निधि	12,181 (12.9)	13,506 (12.8)	2,769	29.4	1,325	10.9
3. सार्वजनिक जमाराशि	2,831 (3.0)	4,062 (3.9)	860	43.6	1,231	43.5
4. उधार राशियां	64,078 (68.0)	69,816 (66.2)	8181	14.6	5,738	9.0
5. अन्य देयताएं	11,229 (11.9)	14,404 (13.7)	5,198	86.2	3,175	28.3
कुल देयताएं आस्तियां	94,212 (100.0)	1,05,431 (100.0)	17,084	22.2	11,219	11.9
1. निवेश	18,498	21,102	2,812	17.9	2,604	14.1
(i) एसएलआर प्रतिभूतियां @	9,634 (10.2)	13,487 (12.8)	222	2.4	3,854	40.0
(ii) गैर एसएलआर निवेश	8,864 (9.4)	7,614 (7.2)	2,590	41.3	-1,250	-14.1
2. ऋण और अग्रिम	71,119 (75.5)	77,901 (73.9)	13,108	22.6	6,782	9.5
3. बिल संबंधी कारोबार	45 (0.0)	89 (0.1)	21	87.9	44	97.4
4. अन्य आस्तियां	4,550 (4.8)	6,339 (6.0)	1,143	33.6	1,789	39.3

अ: अर्नतिम।

@ एसएलआर निवेश में 'अनुमोदित प्रतिभूतियां' और अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की 'भार-रहित मीयादी जमाराशियां' शामिल हैं। उधार और अग्रिम में किराया खरीद और पट्टा आस्तियां शामिल हैं।

+ जमाराशि लेने वाली दो बड़ी एनबीएफसी के जमाराशि न लेने वाली एनबीएफसी में बदल जाने के चलते प्रदत्त पूंजी में गिरावट हुई।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हिस्से हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.17: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी के श्रेणी के अनुसार गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की देयता के मुख्य घटक

(राशि करोड़ रुपए में)

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का वर्गीकरण	गै.बैं.वि. कंपनियों की संख्या		जमाराशियां		उधार राशियां		देयताएं	
	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9
आस्ति वित्त कंपनियां	225	174	2,287 (80.8)	3,628 (89.3)	41,927 (65.4)	49,022 (70.2)	60,902 (64.6)	74,008 (70.2)
ऋण कंपनियां	65	43	544 (19.2)	434 (10.7)	22,151 (34.6)	20,795 (29.8)	33,310 (35.4)	31,424 (29.8)
कुल	290	217	2,831	4,062	64,078	69,816	94,212	1,05,431

अ: अनंतिम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हिस्से हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

कुल जमाराशियों में 73.9 प्रतिशत के साथ चेन्नै का सबसे बड़ा हिस्सा था।

एनबीएफसी के पास रखी सार्वजनिक जमाराशियों पर ब्याज-दर

6.29 एनबीएफसी-डी की सार्वजनिक जमाराशियों में सबसे अधिक राशि 10 प्रतिशत तक की ब्याज दर के दायरे में संग्रह की गयी और मार्च 2011 के अंत में इसका हिस्सा लगभग तीन-चौथाई था (सारणी VI.20 और चार्ट VI.6)।

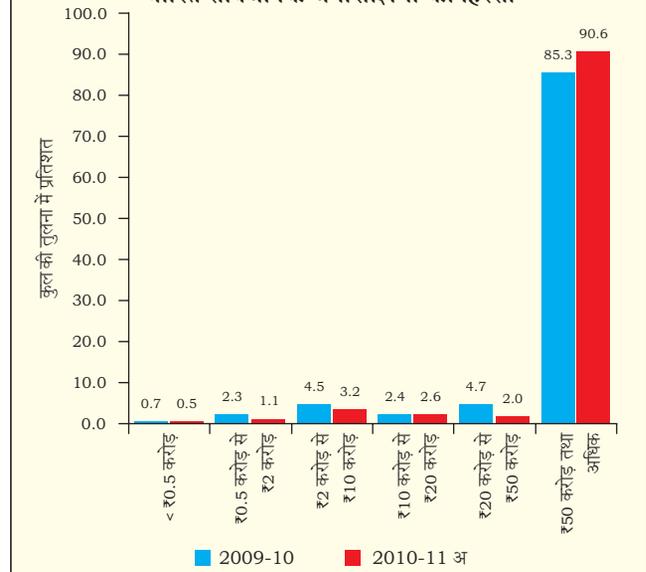
सार्वजनिक जमाराशियों की परिपक्वता प्रोफाइल

6.30 परिपक्वता अवधि के अनुसार एनबीएफसी-डी द्वारा संग्रह की गई सार्वजनिक जमाराशियों में सबसे बड़ा हिस्सा अल्पावधि से

मध्यावधि परिपक्वता का था। मार्च 2011 के अंत में, जमाराशियों का सबसे बड़ा हिस्सा दो वर्ष से अधिक तथा तीन वर्ष तक की परिपक्वता वाली जमाराशियों का था जिसके बाद एक वर्ष से कम परिपक्वता वाली राशियों का क्रम आता था। 2010-11 में, दो वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक की परिपक्वता अवधि वाली जमाराशियों के हिस्से में वृद्धि हुई, जबकि प्रायः अन्य सभी परिपक्वता अवधि वाली जमाराशियों के हिस्से में गिरावट आई (सारणी VI.21 और चार्ट VI.7)।

6.31 एनबीएफसी-डी के लिए बैंक तथा वित्तीय संस्थाएं उधार के प्रमुख स्रोत थे और मार्च 2011 के अंत में इनका हिस्सा लगभग 50 प्रतिशत था। सरकार से लिए गए उधारों (केवल सरकारी ऋण कंपनियों को दिए गए उधार) के हिस्से में वृद्धि देखी गई, जबकि बाह्य स्रोतों से लिए गए उधार नगण्य थे। 2010-11 में अन्य स्रोतों (जिनमें अन्य कंपनियों से लिए गए उधार राशियों के साथ ही वाणिज्यिक पत्र, म्युच्युअल फंड और किसी अन्य प्रकार की विधि से ली

चार्ट VI.4 : जमाराशियों के दायरे के अनुसार एनबीएफसी-डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियों का हिस्सा



सारणी VI.18: जमाराशियों के दायरे के अनुसार एनबीएफसी-डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियां

(राशि करोड़ रुपए में)

जमाराशि की सीमा	मार्च के अंत में			
	गै.बैं.वि.कं. की संख्या		जमाराशि	
	2009-10	2010-11अ	2009-10	2010-11अ
1	2	3	4	5
1. 0.5 करोड़ रुपए से कम	184	134	21	19
2. 0.5 करोड़ रुपए से अधिक और 2 करोड़ रुपए तक	60	38	64	44
3. 2 करोड़ रुपए से अधिक और 10 करोड़ रुपए तक	27	28	128	129
4. 10 करोड़ रुपए से अधिक और 20 करोड़ रुपए तक	5	7	69	108
5. 20 करोड़ रुपए से अधिक और 50 करोड़ रुपए तक	4	2	133	81
6. 50 करोड़ रुपए और उससे अधिक	10	8	2,416	3,681
कुल	290	217	2,831	4,062

अ: अनंतिम।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.19: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशि- क्षेत्र-वार

क्षेत्र	मार्च के अंत में			
	2010		2011 अ	
	गै.बैं.वि.कं-डी की संख्या	सार्वजनिक जमाराशियां	गै.बैं.वि.कं-डी की संख्या	सार्वजनिक जमाराशियां
1	2	3	4	5
उत्तरी	189	335	144	188
पूर्व	9	9	8	4
पश्चिमी	27	612	20	929
दक्षिणी	65	1,876	45	2,942
कुल	290	2,831	217	4,062
महानगरीय क्षेत्र:				
कोलकाता	6	9	5	4
चेन्नै	37	1,812	26	2,864
मुंबई	11	592	6	907
नई दिल्ली	55	207	50	98
कुल	109	2,619	87	3,873

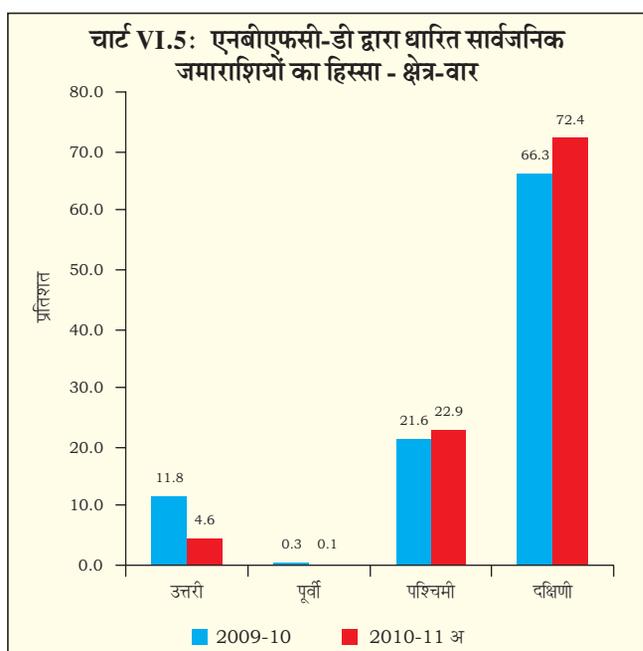
अ: अनंतिम

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

गई उधार राशियां शामिल हैं, जिनको सार्वजनिक जमाराशियों के रूप में नहीं माना जाता है) में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई जिसके चलते एनबीएफसी-डी के कुल उधार में इसके हिस्से में वृद्धि हुई (सारणी VI.22)

एनबीएफसी की आस्तियां

6.32 2010-11 के दौरान जमाराशि लेने वाली एनबीएफसी-डी की कुल आस्तियों में धीमी वृद्धि दर्ज हुई जो मुख्यतः आस्ति वित्त



सारणी VI.20: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियां - जमाराशि पर ब्याज दर-दायरा-वार

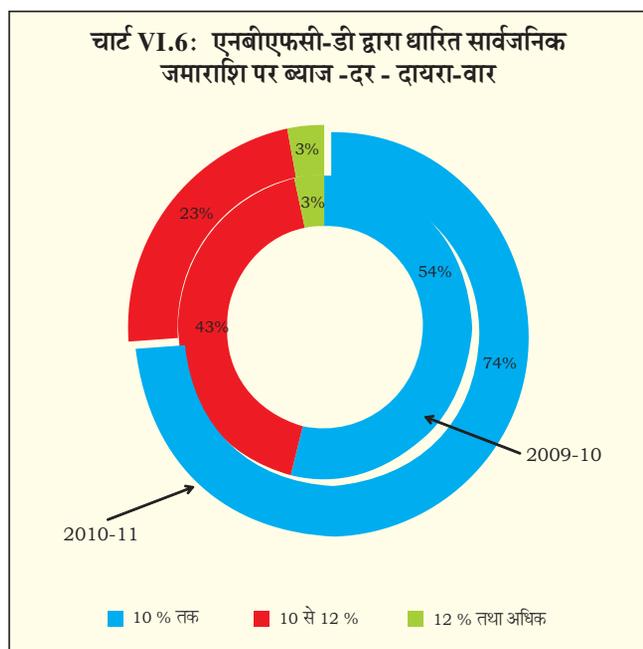
जमाराशि की ब्याज-दर का दायरा	मार्च के अंत में	
	2010	2011 अ
	2	3
10 प्रतिशत तक	1,516 (53.6)	2,996 (73.8)
10 प्रतिशत से अधिक और 12 प्रतिशत तक	1,222 (43.2)	945 (23.3)
12 प्रतिशत और उससे अधिक	93 (3.3)	121 (3.0)
कुल	2,831	4,062

अ: अनंतिम
टिप्पणी: सार्वजनिक जमाराशि पर ब्याज-दर तथापि 12.5 प्रतिशत से अधिक नहीं बढ़ी। कोष्ठक में दिये गये आंकड़े कुल के प्रतिशत हिस्से हैं।
स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

कंपनियों की आस्तियों में हुई वृद्धि की वजह से थी (सारणी VI.23)। मार्च 2011 के अंत में, एनबीएफसी-डी क्षेत्र की कुल आस्तियों के लगभग तीन-चौथाई से अधिक का हिस्सा आस्ति वित्त कंपनियों के पास था। घटक-वार रूप में, कुल आस्तियों में अग्रिमों का हिस्सा प्रमुख था और उसके बाद निवेश का स्थान था।

आस्ति के आकार के अनुसार एनबीएफसी-डी का वितरण

6.33 जमाराशि संग्रह करने की क्षमता के कारण केवल बड़ी एनबीएफसी-डी के पास बड़ा आस्ति आधार था। मार्च 2011 के अंत में, केवल 7 प्रतिशत एनबीएफसी-डी का आस्ति आकार 500 करोड़



सारणी VI.21: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी - डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियों की परिपक्वता का स्वरूप

(राशि करोड़ रुपए में)

परिपक्वता अवधि	मार्च के अंत में	
	2010	2011 अ
1	2	3
1. एक वर्ष से कम	1,034 (36.5)	982 (24.2)
2. एक वर्ष से अधिक और 2 वर्ष तक	595 (21.0)	794 (19.6)
3. 2 वर्ष से अधिक और 3 वर्ष तक	1,031 (36.4)	1,988 (48.9)
4. 3 वर्ष से अधिक और 5 वर्ष तक	81 (2.9)	222 (5.5)
5. 5 वर्ष और उससे अधिक@	90 (3.2)	77 (1.9)
कुल	2,831	4,062

अ: अर्न्तितम्

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

@ 31 मार्च 2011 को 33 करोड़ रुपए की बेनामी सार्वजनिक जमाराशि सहित (गत वर्ष 58 करोड़ रुपए)।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

रुपए से अधिक था और सभी एनबीएफसी-डी की कुल आस्तियों में इनका हिस्सा 97.5 प्रतिशत था (सारणी VI.24)।

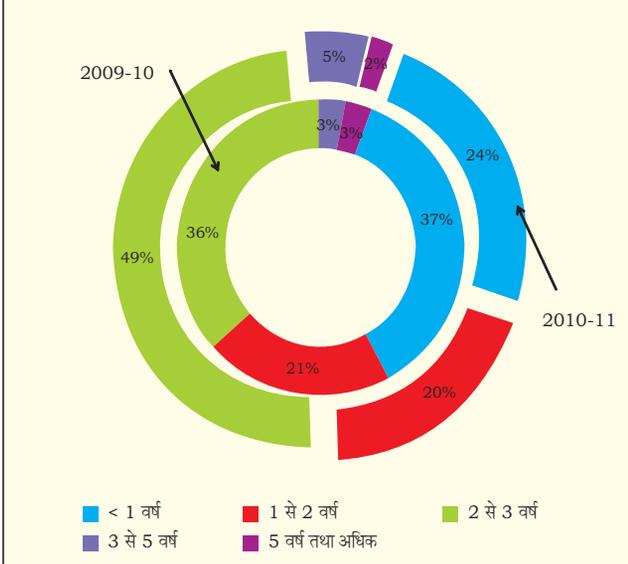
एनबीएफसी की आस्तियों का वितरण - कार्यकलापों के प्रकार

6.34 2010-11 के दौरान, एनबीएफसी-डी के उधार तथा अंतर-कंपनी जमाराशियों के रूप में धारित आस्तियों और निवेशों में काफी वृद्धि हुई। एनबीएफसी-डी क्षेत्र की कुल आस्तियों में इन दो कार्यकलाप वाली श्रेणियों का हिस्सा 93.9 प्रतिशत था (सारणी VI.25)।

एनबीएफसी-डी का वित्तीय कार्यनिष्पादन

6.35 एनबीएफसी-डी के वित्तीय निष्पादन में 2010-11 में सुधार हुआ जैसा कि उनके परिचालन लाभ में हुई वृद्धि से ज्ञात होता है।

चार्ट VI.7: एनबीएफसी-डी द्वारा धारित सार्वजनिक जमाराशियों की परिपक्वता का स्वरूप



लाभ में बढ़ोतरी मुख्यतः आय में वृद्धि (निधि आधारित) और व्यय में थोड़ी गिरावट की वजह से हुई। कर के संबंध में किए गए प्रावधान के साथ-साथ परिचालन लाभ में हुई वृद्धि से वर्ष 2010-11 में निवल लाभ लगभग दुगुनी हो गई (सारणी VI.26)।

6.36 2010-11 में कुल औसत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में व्यय में थोड़ी गिरावट हुई, जबकि कुल औसत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में आय कमोबेश एक जैसी रही, जिसके कारण एनबीएफसी-डी की कुल औसत आस्ति (आस्तियों पर प्रतिलाभ) की तुलना में निवल लाभ में वृद्धि हुई (चार्ट VI.8)।

सारणी VI.22: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की उधार राशियों के स्रोत

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्गीकरण	सरकारी		बाह्य स्रोत @		बैंक और वित्तीय संस्थाएं		डिबेंचर		अन्य		कुल उधार	
	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2010-11 अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
आस्ति वित्त	0 (0.0)	0 (0.0)	757 (100.0)	3 (100.0)	24,159 (75.8)	28,329 (80.2)	12,030 (80.3)	12,285 (85.7)	4,980 (42.3)	8,405 (59.0)	41,927 (65.4)	49,022 (70.2)
ऋण	4,710 (100.0)	5,908 (100.0)	0 (0.0)	0 (0.0)	7,693 (24.2)	6,991 (19.8)	2,943 (19.7)	2,045 (14.3)	6,805 (57.7)	5,850 (41.0)	22,151 (34.6)	20,795 (29.8)
कुल	4,710	5,908	757	3	31,853	35,320	14,973	14,330	11,785	14,256	64,078	69,816

अ: अर्न्तितम्;

@ : इसमें (i) विदेशी सरकार, (ii) विदेशी प्राधिकरण, और (iii) विदेशी नागरिक या व्यक्ति शामिल हैं।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.23: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के वर्गीकरण-वार गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की आस्तियों के मुख्य घटक

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्गीकरण	मार्च के अंत में					
	आस्तियां		अग्रिम		निवेश	
	2010	2011 अ	2010	2011 अ	2010	2011 अ
1	2	3	4	5	6	7
आस्ति वित्त कंपनियां	60,902 (64.6)	74,008 (70.2)	46,651 (65.6)	55,724 (71.5)	10,688 (57.8)	12,630 (59.9)
ऋण कंपनियां	33,310 (35.4)	31,424 (29.8)	24,468 (34.4)	22,178 (28.5)	7,810 (42.2)	8,472 (40.1)
कुल	94,212	1,05,431	71,119	77,901	18,498	21,102

अ: अर्न्तम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सुदृढ़ता संकेतक: एनबीएफसी-डी की आस्ति गुणवत्ता

6.37 हाल के वर्षों में देखे गए रुझान के अनुरूप 2010-11 में एनबीएफसी-डी के क्रेडिट एक्सपोजर की तुलना में सकल एनपीए अनुपात में काफी गिरावट आई। एनपीए के संबंध में किए गए प्रावधान मार्च 2011 के अंत तक पिछले लगातार चार वर्षों के दौरान के एनपीए की राशि से अधिक होने के कारण निवल एनपीए ऋणात्मक रहा (सारणी VI.27)।

6.38 2009-10 में आस्ति वित्त तथा ऋण कंपनियों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ जैसा कि इन कंपनियों के सकल अग्रिमों की

तुलना में सकल एनपीए अनुपात में आई गिरावट से स्पष्ट होता (सारणी VI.28)।

6.39 2010-11 में, सभी कंपनियों के एनपीए की सभी तीन श्रेणियों अर्थात् अवमानक, संदिग्ध और हानिवाली आस्तियों के हिस्से में गिरावट आई जो इन संस्थाओं की आस्तियों की गुणवत्ता में हुए सुधार को रेखांकित करता है। तथापि, ऋण कंपनियों के मामले में, मार्च 2011 के अंत में मानक आस्तियों का हिस्सा सुधरकर 98.7 प्रतिशत हो गया (सारणी VI.29)।

पूंजी पर्याप्तता अनुपात

6.40 मार्च 2011 के अंत में, 204 एनबीएफसी में से 199 का सीआरएआर 15 प्रतिशत अथवा इससे अधिक था (सारणी VI.30)। इससे मालूम होता है कि एनबीएफसी क्षेत्र पिछले कुछ वर्षों से समेकन की प्रक्रिया से गुजर रहा है जिसमें कमजोर एनबीएफसी

सारणी VI.24: आस्ति आकार के दायरे के अनुसार गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की आस्तियां

(राशि करोड़ रुपए में)

	कंपनियों की सं.		आस्तियां	
	2010	2011अ	2010	2011अ
1	2	3	4	5
1. 0.25 करोड़ रुपए से कम	3	2	0	0
2. 0.25 करोड़ रुपए से अधिक और 0.50 करोड़ रुपए तक	20	9	8	3
3. 0.50 करोड़ रुपए से अधिक और 2 करोड़ रुपए तक	105	70	125	80
4. 2 करोड़ रुपए से अधिक और 10 करोड़ रुपए तक	91	73	416	347
5. 10 करोड़ रुपए से अधिक और 50 करोड़ रुपए तक	37	34	831	822
6. 50 करोड़ रुपए से अधिक और 100 करोड़ रुपए तक	10	8	702	508
7. 100 करोड़ रुपए से अधिक और 500 करोड़ रुपए तक	7	6	1,377	831
8. 500 करोड़ रुपए से अधिक	17	15	90,753	1,02,839
कुल	290	217	94,212	1,05,431

अ: अर्न्तम।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.25: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की आस्तियों का वितरण- कार्यकलापवार

(राशि करोड़ रुपए में)

कार्यकलाप	मार्च के अंत में		
	2010	2011 अ	प्रतिशत वृद्धि 2011 अ
1	2	3	4
ऋण और अंतर-कंपनी जमाराशियां	71,119 (75.5)	77,901 (73.9)	9.5
निवेश	18,498 (19.6)	21,102 (20.0)	14.1
बिल	45 (0.1)	89 (0.1)	97.4
अन्य आस्तियां	4,550 (4.8)	6,339 (6.0)	39.3
कुल	94,212	1,05,431	11.9

अ: अर्न्तम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.26: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी का वित्तीय कार्य-निष्पादन
(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में	
	2010	2011 अ
1	2	3
क. आय (i+ii)	13,615	15,196
(i) निधि आधारित	13,388	15,069
	(98.3)	(99.2)
(ii) शुल्क आधारित	227	127
	(1.7)	(0.8)
ख. व्यय (i+ii+iii)	11,038	10,934
(i) वित्तीय	6,546	6,816
	(59.3)	(62.3)
जिसमें से: ब्याज भुगतान	730	902
	(6.6)	(8.2)
(ii) परिचालन	2,666	2,968
	(24.2)	(27.1)
(iii) अन्य	1,825	1,150
	(16.5)	(10.5)
ग. कर प्रावधान	1,096	1,402
घ. परिचालन लाभ (करपूर्व लाभ)	2,577	4,263
ङ. निवल लाभ (करोत्तर लाभ)	1,482	2,861
च. कुल आस्तियां	94,212	1,05,431
छ. वित्तीय अनुपात (कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में)		
i) आय	14.5	14.4
ii) निधि आय	14.2	14.3
iii) शुल्क आय	0.0	0.0
iv) व्यय	11.7	10.4
v) वित्तीय व्यय	0.1	0.1
vi) परिचालन व्यय	2.8	2.8
vii) कर प्रावधान	1.2	1.3
viii) निवल लाभ	1.6	2.7
ज. आय की तुलना में लागत अनुपात	81.1	72.0

अ: अर्न्तितम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

धीरे-धीरे कारोबार से अलग हो रहे हैं और मजबूत एनबीएफसी के लिए मार्ग प्रशस्त हो रहा है। एनबीएफसी को एक साथ मिलाकर उनकी निवल स्वाधिकृत निधियों (एनओएफ) की तुलना में सार्वजनिक

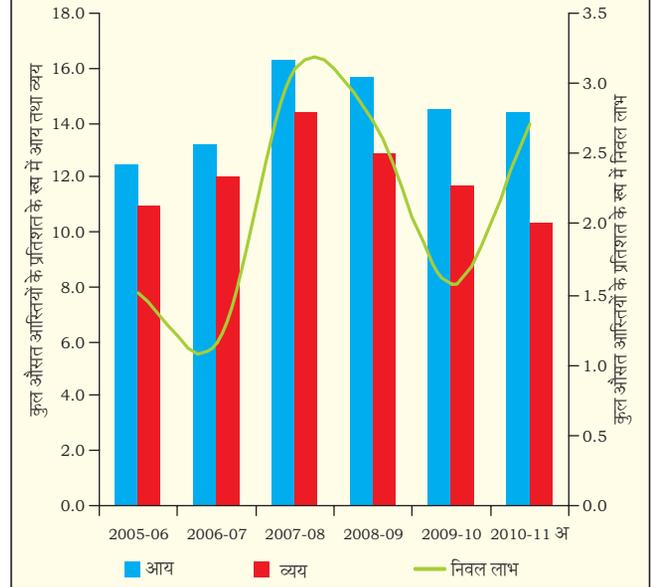
सारणी VI.27: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी के अनर्जक आस्ति अनुपात
(प्रतिशत)

मार्च के अंत में	क्रेडिट एक्सपोजर के प्रति सकल अनर्जक आस्तियां	क्रेडिट एक्सपोजर के प्रति निवल अनर्जक आस्तियां
1	2	3
2002	10.6	3.9
2003	8.8	2.7
2004	8.2	2.4
2005	5.7	2.5
2006	3.6	0.5
2007	2.2	0.2
2008	2.1	#
2009	2.0	#
2010	1.3	#
2011अ	0.7	#

#: अनर्जक आस्तियों से अधिक प्रावधान।

स्रोत: एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

चार्ट VI.8 : एनबीएफसी-डी का वित्तीय कार्य-निष्पादन



जमाराशि के अनुपात में मार्च 2011 के अंत में 0.3 प्रतिशत की थोड़ी वृद्धि हुई (सारणी VI.31)। 2010-11 में एनबीएफसी-डी के एनओएफ और सार्वजनिक जमाराशि में वृद्धि हुई। यह वृद्धि मुख्यतः उन कंपनियों तक सीमित थी जिनका एनओएफ श्रेणी आकार 500 करोड़ रुपए अथवा इससे अधिक था (सारणी VI.32)।

अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी)

6.41 मार्च 2011 के अंत में, आरएनबीसी की आस्तियों में 36 प्रतिशत की गिरावट आई। आस्तियों में मुख्य रूप से भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियों, बांडों/डिबेंचरों तथा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों

सारणी VI.28: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की श्रेणी के अनुसार गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की अनर्जक आस्तियां
(राशि करोड़ रुपए में)

वर्गीकरण/ मार्च के अंत में	सकल अनर्जक आस्तियां			
	सकल अग्रिम	राशि	सकल अग्रिमों की तुलना में प्रतिशत	निवल अग्रिम
1	2	3	4	5
आस्ति वित्त				
2009-10	45,449	350	0.77	44,480
2010-11अ	51,748	251	0.49	50,807
ऋण कंपनियों				
2009-10	20,529	541	2.63	19,913
2010-11अ	18,295	243	1.33	18,046
सभी कंपनियों				
2009-10	65,978	891	1.35	64,393
2010-11अ	70,043	494	0.70	68,853

अ: अर्न्तितम।

स्रोत: एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

सारणी VI.29: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की श्रेणी के अनुसार गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की आस्तियों का वर्गीकरण

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्गीकरण / मार्च के अंत में	मानक आस्तियां	अवमानक आस्तियां	संदिग्ध आस्तियां	हानि आस्तियां	सकल अनर्जक आस्तियां	सकल अग्रिम
1	2	3	4	5	6	7
आस्ति वित्त कंपनियां						
2009-10	45,098 (99.2)	287 (0.6)	46 (0.1)	18 (0.0)	350 (0.8)	45,449 (100.0)
2010-11अ	51,497 (99.5)	214 (0.4)	29 (0.1)	8 (0.0)	251 (0.5)	51,748 (100.0)
ऋण कंपनियां						
2009-10	19,989 (97.4)	298 (1.5)	169 (0.8)	74 (0.4)	541 (2.6)	20,529 (100.0)
2010-11अ	18,053 (98.7)	102 (0.6)	140 (0.8)	0 (0.0)	243 (1.3)	18,295 (100.0)
सभी कंपनियां						
2009-10	65,087 (98.6)	585 (0.9)	214 (0.3)	92 (0.1)	891 (1.4)	65,978 (100.0)
2010-11अ	69,549 (99.3)	316 (0.5)	169 (0.1)	8 (0.0)	494 (0.7)	70,043 (100.0)

अ: अर्न्तितम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल क्रेडिट एक्सपोजर के प्रतिशत हैं।

स्रोत: एनबीएफसी-डी की छमाही विवरणियां।

की मीयादी जमाराशियों /जमा-प्रमाणपत्रों में निवेश शामिल था। तथापि, 2010-11 में आरएनबीसी की निवल स्वाधिकृत निधि में 2.3 प्रतिशत की थोड़ी वृद्धि हुई (सारणी VI.33)।

6.42 2010-11 के दौरान आरएनबीसी की आय में हुई गिरावट उनके व्यय में हुई गिरावट से अधिक थी, जिसके चलते वर्ष के दौरान उनके परिचालन लाभ में काफी गिरावट आई। कराधान के लिए किए गए प्रावधान में कमी आने के बावजूद, 2010-11 में आरएनबीसी के निवल लाभ में तेज गिरावट हुई जबकि पिछले इसमें वर्ष तेज वृद्धि हुई थी।

आरएनबीसी की जमाराशियों का क्षेत्रीय पैटर्न

6.43 मार्च 2011 के अंत में, दो अवशिष्ट गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (आरएनबीसी) थीं जिनमें से एक पूर्वी क्षेत्र में तथा दूसरी

मध्य क्षेत्र में थी। आरएनबीसी अन्य कारोबारी मॉडलों की ओर अग्रसर हो रही हैं और ये 2015 तक अपनी जमाराशि देयताओं को

सारणी VI.31: एनबीएफसी की श्रेणी के अनुसार गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की सार्वजनिक जमाराशि की तुलना में निवल स्वाधिकृत निधि

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्गीकरण	निवल स्वाधिकृत निधियां		सार्वजनिक जमाराशियां	
	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5
आस्ति वित्त कंपनियां	8,697	10,818	2,287 (0.3)	3,628 (0.3)
ऋण कंपनियां	4,806	4,170	545 (0.1)	434 (0.1)
कुल	13,503	14,987	2,831 (0.2)	4,062 (0.3)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिये गये आंकड़े निवल स्वाधिकृत निधि की तुलना में सार्वजनिक जमाराशि का अनुपात हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणीय।

सारणी VI.30: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी का पूंजी पर्याप्तता अनुपात

कंपनियों की संख्या

सीआरएआर दायरा	2009-10			2010-11अ		
	आ.वि.क.	ऋ.क.	कुल	आ.वि.क.	ऋ.क.	कुल
1	2	3	4	5	6	7
1) 12 प्रतिशत से कम	2	1	3	1	1	2
क) 9 प्रतिशत से कम	2	0	2	1	1	2
ख) 9 प्रतिशत से अधिक तथा 12 प्रतिशत तक	0	1	1	0	0	0
2) 12 प्रतिशत से अधिक तथा 15 प्रतिशत तक	1	0	1	1	2	3
3) 15 प्रतिशत से अधिक तथा 20 प्रतिशत तक	5	3	8	5	3	8
4) 20 प्रतिशत से अधिक तथा 30 प्रतिशत तक	21	7	28	19	3	22
5) 30 प्रतिशत से अधिक	182	53	235	142	27	169
कुल	211	64	275	168	36	204

अ: अर्न्तितम।

टिप्पणी: आ.वि.क.-आस्ति वित्त कंपनी; ऋ.क.: ऋण कंपनियां; नि.क.: निवेश कंपनी

स्रोत: छमाही विवरणियां।

सारणी VI.32: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी-डी की सार्वजनिक जमाराशियों की तुलना में निवल स्वाधिकृत निधि का दायरा

(राशि करोड़ रुपए में)

निवल स्वाधिकृत निधि का दायरा	2009-10			2010-11अ		
	कंपनियों की संख्या	निवल स्वाधिकृत निधि	सार्वजनिक जमा राशियां	कंपनियों की संख्या	निवल स्वाधिकृत निधि	सार्वजनिक जमा राशियां
1	2	3	4	5	6	7
0.25 करोड़ रुपए तक	4	-436	174	2	-200	32
0.25 करोड़ रुपए से अधिक और 2 करोड़ रुपए तक	172	130	46	113	84	32
2 करोड़ रुपए से अधिक और 10 करोड़ रुपए तक	70	265	134	65	266	136
10 करोड़ रुपए से अधिक और 50 करोड़ रुपए तक	27	538	189	20	453	113
50 करोड़ रुपए से अधिक और 100 करोड़ रुपए तक	1	66	52	2	120	104
100 करोड़ रुपए से अधिक और 500 करोड़ रुपए तक	6	1,405	480	7	1,712	453
500 करोड़ रुपए से अधिक	10	11,535	1,754	8	12,553	3,192
कुल	290	13,503	2,830	217	14,987	4,062

अ: अर्न्ततम।
स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

घटाकर 'शून्य' कर लेंगी। मुख्यतः मध्य क्षेत्र में स्थित आरएनबीसी द्वारा धारित जमाराशियों में उल्लेखनीय गिरावट आने की वजह से 2010-11 में दो आरएनबीसी की सार्वजनिक जमाराशियों में काफी गिरावट हुई (सारणी VI.34)।

आरएनबीसी के निवेश का स्वरूप

6.44 2010-11 में जमाराशियों में हुई गिरावट की वजह से आरएनबीसी के निवेश में गिरावट आई। यह गिरावट भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियों के मामले में काफी अधिक था (सारणी VI.35)।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई

6.45 मार्च 2010 की तुलना में मार्च 2011 को समाप्त वर्ष में प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशि नहीं लेने वाली एनबीएफसी की आस्तियों में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मार्च 2011 को समाप्त वर्ष के दौरान एनबीएफसी-एनडी-एसआई की कुल उधार राशियों (जमानती और बेजमानती) में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो कुल देयताओं का लगभग दो-तिहाई था (सारणी VI.36)। एनबीएफसी-एनडी-एसआई के मामले में जमानती उधार निधियों का अकेला सबसे बड़ा स्रोत बना रहा, जिसके बाद बेजमानती उधार, आरक्षित निधि तथा अधिशेष का स्थान था।

सारणी VI.33 : अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों का प्रोफाइल

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में		घट-बढ़ प्रतिशत	
	2010	2011अ	2009-10	2010-11अ
1	2	3	4	5
क. आस्तियां (i से v)	17,920	11,466	-11.6	-36.0
(i) भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	2,467	1,308	-53.0	-47.0
(ii) अनुसूचित वाणिज्य बैंकों / सरकारी वित्तीय संस्थाओं की मीयादी जमाराशि / जमा प्रमाणपत्र में निवेश	4,860	2,652	-19.0	-45.4
(iii) सरकारी कंपनी/सरकारी क्षेत्र के बैंक / सरकारी वित्त संस्था / निगम के बांड/डिबेंचर/वाणिज्यिक पत्र	5,860	2,876	-16.2	-50.9
(iv) अन्य निवेश	710	49	137.4	-93.1
(v) अन्य आस्तियां	4,022	4,582	130.9	13.9
ख. निवल स्वाधिकृत निधि	2,921	2,988	56.2	2.3
ग. कुल आय (i+ii)	1,946	1,159	-19.5	-40.4
(i) निधि आय	1,920	1,128	-17.1	-41.2
(ii) शुल्क आय	26	31	-74.2	18.8
घ. कुल व्यय (i+ii+iii)	1,400	1,006	-32.4	-28.1
(i) वित्तीय लागत	974	631	-39.3	-35.2
(ii) परिचालन लागत	343	368	-9.5	7.3
(iii) अन्य लागत	83	7	-3.5	-91.4
ड. कराधान	164	62	10.1	-62.2
च. परिचालन लाभ (पीबीटी)	546	153	57.5	-71.9
छ. निवल लाभ(पीएटी)	382	91	93.1	-76.1

अ: अर्न्ततम पीबीटी: कर पूर्व लाभ पीएटी: करोत्तर लाभ
स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

सारणी VI.34: अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों द्वारा धारित सार्वजनिक जमा राशियां - क्षेत्र-वार

(राशि करोड़ रुपए में)

	2009-10		2010-11अ	
	अ.गै.बैंक की संख्या	सार्वजनिक जमा राशि	अ.गै.बैंक की संख्या	सार्वजनिक जमा राशि
1	2	3	4	5
मध्य	1	11,235	1	5,290
		(77.4)		(66.9)
पूर्वी	1	3,285	1	2,612
		(22.6)		(33.1)
कुल	2	14,521	2	7,902
महानगरीय क्षेत्र :				
कोलकाता	1	3,285	1	2,612
कुल	1	3,285	1	2,612

अ: अर्न्तम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े संबंधित कुल के प्रतिशत हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

6.46 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र में तेजी से वृद्धि हो रही है तथा उधार उनकी निधियों का अकेला सबसे बड़ा स्रोत है, जो अधिकांशतः बैंकों/वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त होता है। इस प्रकार,

सारणी VI.35: अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों के निवेश का स्वल्प

(राशि करोड़ रुपए में)

	2009-10	2010-11अ
1	2	3
जमाकर्ताओं के प्रति समग्र देयताएं (एएलडी)	14,521	7,902
(i) भार-रहित अनुमोदित प्रतिभूतियां	2,467	1,308
	(17.0)	(16.6)
(ii) बैंकों में सावधि जमा राशियां	4,860	2,652
	(33.5)	(33.6)
(iii) सरकारी कंपनी/सरकारी क्षेत्र के बैंक/सरकारी वित्तीय संस्था/निगम के बॉन्ड या डिबेंचर या वाणिज्यिक पत्र	5,860	2,876
	(40.4)	(36.4)
(iv) अन्य निवेश	710	49
	(4.9)	(0.6)

अ: अर्न्तम।

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े एएलडी का प्रतिशत दर्शाते हैं।

स्रोत: वार्षिक विवरणियां।

उनमें एक प्रणालीगत संबद्धता होती है तथा उन पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रणाली को उनसे कोई जोखिम नहीं है। जहां तक वे बैंक वित्तपोषण पर निर्भर रहते हैं, जमाकर्ताओं के लिए अप्रत्यक्ष एक्सपोजर रहता है। जहां निधियन

सारणी VI.36: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का समेकित तुलनपत्र

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	2009-10	2010-11अ	घट-बढ़ प्रतिशत
1	2	3	4
1. शेयर पूंजी	36,462	40,591	11.3
2. आरक्षित निधि और अधिशेष	1,27,131	1,45,177	14.2
3. कुल उधार	3,85,779	5,00,938	29.9
अ. जमानती उधार	1,77,408	2,74,990	55.0
अ.1. डिबेंचर	58,590	98,292	67.8
अ.2. बैंकों से उधार	45,850	92,698	102.2
अ.3. वित्तीय संस्थाओं से उधार	7,971	7,769	-2.5
अ.4. उपचित ब्याज	3,526	5,144	45.9
अ.5. अन्य	61,471	71,086	15.6
आ. बेजमानती उधार	2,08,371	2,25,948	8.4
आ.1. डिबेंचर	82,544	74,946	-9.2
आ.2. बैंकों से उधार	43,575	45,129	3.6
आ.3. वित्तीय संस्थाओं से उधार	2,471	2,923	18.3
आ.4. रिश्तेदारों से उधार	1,854	1,127	-39.2
आ.5. इंटर-कारपोरेट उधार	22,153	24,883	12.3
आ.6. वाणिज्यिक पत्र	31,049	32,321	4.1
आ.7. उपचित ब्याज	3,696	4,355	17.8
आ.8. अन्य	21,029	40,263	91.5
4. वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान	39,433	43,648	10.7
कुल देयताएं / कुल आस्तियां	5,88,806	7,30,366	24.0
आस्तियां			
1. ऋण तथा अग्रिम	3,48,517	4,58,173	31.5
1.1. जमानती	2,48,655	3,32,544	33.7
1.2. बेजमानती	99,862	1,25,629	25.8
2. किराया खरीद आस्तियां	41,685	50,019	20.0
3. निवेश	1,19,788	1,36,143	13.7
3.1. दीर्घनिवेश	82,944	95,662	15.3
3.2. वर्तमान निवेश	36,844	40,481	9.9
4. नकद और बैंक शेष	25,857	29,877	15.5
5. अन्य चालू आस्तियां	40,565	42,444	4.6
6. अन्य आस्तियां	12,393	13,431	8.4
ज्ञापन मदें			
1. पूंजी बाजार एक्सपोजर जिसमें से ईक्विटी शेयर	59,905	78,399	30.9
2. कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में सीएमई	27,772	31,743	14.3
3. लोवरज अनुपात	10.2	10.7	
	2.60	2.93	

अ: अर्न्तम।

टिप्पणी: 1 प्रस्तुत आंकड़े एनडीएसआई से संबंधित हैं जिन्होंने मार्च 2010, मार्च 2011 और जून 2011 की अवधि में लगातार रिपोर्ट किया गया है। रिपोर्ट करने वाली सभी एनडी-एसआई की कुल आस्तियों में इन एनडी-एसआई का हिस्सा 93.4 प्रतिशत है।

2. पूंजी बाजार एक्सपोजर (सीएमई) में (i) सूचीबद्ध लिखतों में निवेश और (ii) सीएमई संबद्ध उधार एवं अग्रिम शामिल हैं।

स्रोत: एनडी-एसआई की मासिक विवरणी।

के संकेन्द्रण में जोखिम रहती है, वहीं एनबीएफसी को दिए गए बैंक उधार पर अधिकतम सीमा निर्धारित करने से उनकी वृद्धि बाधित हो सकती है। समूचे एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र का लीवरेज अनुपात 2010-11 में 2.93 तक बढ़ गया। तथापि, संवेदनशील क्षेत्र, जो पूंजी बाजार जैसे संभाव्य उछाल-गिरावट के चक्र के प्रति प्रणत रहता है, के प्रति एनडी-एसआई क्षेत्र के एक्सपोजर में भी वृद्धि दिखायी देती है। वित्तीय क्षेत्र में तेजी से होते बदलाव ने विनियामक के समक्ष नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं और विशेष रूप से काफी जटिल एनबीएफसी क्षेत्र के लिए एक उपयुक्त विनियामक सुरक्षात्मक ढांचा तैयार करना मुख्य चुनौती है (बॉक्स VI.3)।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई का क्षेत्रवार उधार

6.47 एनबीएफसी-एनडी-एसआई के कुल उधार के क्षेत्रवार विश्लेषण से मालूम होता है कि उत्तरी क्षेत्र के साथ पश्चिमी क्षेत्र ने मार्च 2011 तथा मार्च 2010 के समाप्त वर्ष के दौरान कुल उधार में 80 प्रतिशत से अधिक का हिस्सा बनाए रखा; यह प्रवृत्ति जून 2011 को समाप्त तिमाही के दौरान भी बनी रही। पिछले वर्ष की तुलना में मार्च 2011 को समाप्त तिमाही के दौरान सभी क्षेत्रों में काफी अधिक वृद्धि दर्ज की गयी। जून 2011 को समाप्त तिमाही के दौरान सभी क्षेत्रों में इसी प्रकार की प्रवृत्ति बनी रही। (सारणी VI.37)।

वित्तीय कार्यानिष्पादन

6.48 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र के वित्तीय कार्यानिष्पादन में थोड़ा सुधार हुआ जैसा कि पिछले वर्ष की तुलना में 2010-11 के दौरान निवल लाभ की वृद्धि में दिखायी देता है। इस अवधि के दौरान आस्ति पर प्रतिलाभ में कोई बदलाव नहीं हुआ (सारणी VI.38)। समूची एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र की कुल आस्तियों की तुलना

सारणी VI.37: जमाराशियां न लेने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की उधार राशियां

(राशि करोड़ रुपए में)

क्षेत्र	मार्च 2010	मार्च 2011अ	जून 2011अ
1	2	3	4
उत्तरी	2,09,491	2,68,356	2,72,228
पूर्व	13,500	16,937	18,458
पश्चिमी	1,07,846	1,36,877	1,48,291
दक्षिणी	54,943	78,768	85,847
कुल उधार राशियां	3,85,779	5,00,938	5,24,823

अ: अर्न्तितम।

स्रोत: एनबीएफसी-एनडी-एसआई की मासिक विवरणी।

सारणी VI.38: जमाराशियां न लेने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का वित्तीय कार्य-निष्पादन

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च 2010	मार्च 2011अ	जून 2011अ
1	2	3	4
1. कुल आय	60,932	71,696	20,765
2. कुल व्यय	43,609	50,118	14,842
3. निवल लाभ	12,231	15,619	4,667
4. कुल आस्तियां	5,88,806	7,30,366	7,61,805
वित्तीय अनुपात			
(i) कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में आय	10.3	9.8	2.7
(ii) कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में व्यय	7.4	6.9	1.9
(iii) कुल आय की तुलना में निवल लाभ	20.1	21.8	22.5
(iv) कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ	2.1	2.1	0.6

अ: अर्न्तितम।

स्रोत: एनडी-एसआई की मासिक विवरणी (100 करोड़ रुपए और अधिक)।

में सकल एवं निवल दोनों अनर्जक आस्तियों के अनुपात में मार्च 2011 को समाप्त वर्ष के दौरान गिरावट आई। जून 2011 को, अनर्जक आस्तियों के अनुपात में थोड़ी वृद्धि हुई (सारणी VI.39)। मार्च 2011 के अंत तक 253 एनबीएफसी-एनडी-एसआई में से 104 कंपनियों ने अपनी आस्तियों के निधीयन के लिए अपनी खुद की निधि पर निर्भरता दिखायी। तथापि, कुछ कंपनियों ने अपनी आस्तियों के बड़े हिस्से के निधीयन के लिए आईसीडी/वाणिज्यिक पत्र/बैंकों पर निर्भरता दिखायी (सारणी VI.40)।

6.49 मार्च 2011 की स्थिति तक, सीआरएआर के अनुसार रिपोर्ट करने वाली अधिकांश कंपनियों ने न्यूनतम 15 प्रतिशत की पूंजी पर्याप्तता मानदंड को बनाए रखा (सारणी VI.41)। यह बताता है कि एनबीएफसी-एनडी-एसआई के पास काफी गुंजाइश है कि वह आगे विस्तार हेतु अपनी इस पूंजी का उपयोग करे। ये कंपनियां भी अपने मीयादी उधार, कार्यशील पूंजीगत उधार, तथा डिबेंचर/वाणिज्यिक पत्र के लिए मुख्य रूप से राष्ट्रीयकृत बैंकों पर निर्भर थीं। निजी क्षेत्र के नए बैंक दूसरे बड़े बैंक समूह बनकर उभरे हैं, जिनसे ये कंपनियां मीयादी उधार तथा कार्यशील पूंजीगत उधार जुटा सकती हैं (सारणी VI.42)।

सारणी VI.39: गैर-बैंकिंग कंपनी एनडी-एसआई के अनर्जक आस्ति अनुपात

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च 2010	मार्च 2011अ	जून 2011अ
1	2	3	4
1. सकल अग्रिमों की तुलना में सकल एनपीए	2.8	1.8	2.3
2. निवल अग्रिमों की तुलना में निवल एनपीए	1.2	0.7	1.2
3. कुल आस्तियों की तुलना में सकल एनपीए	2.0	1.3	1.7
4. कुल आस्तियों की तुलना में निवल एनपीए	0.9	0.5	0.9

अ: अर्न्तितम।

स्रोत: एनडी-एसआई की मासिक विवरणी (100 करोड़ रुपए और अधिक)।

बॉक्स VI.3: एनबीएफसी क्षेत्र के मुद्दों और चिंताओं पर गठित कार्यदल की सिफारिशें

भारतीय रिजर्व बैंक ने एनबीएफसी क्षेत्र के विनियमन से जुड़े उभरते हुए विभिन्न मुद्दों पर विचार करने के लिए 'एनबीएफसी क्षेत्र के मुद्दों एवं चिंताओं' पर एक कार्यदल गठित किया (अध्यक्ष: श्रीमती उषा थोराट)। उदाहरणार्थ मुद्दे हैं, (i) एनबीएफसी के 'मुख्य कारोबार' की अवधारणा की समीक्षा और एक अलग विनियामक श्रेणी की आवश्यकता पर पुनः विचार; (ii) एनबीएफसी के प्रवेश मानदंड की पुनः समीक्षा; (iii) एनबीएफसी की कुछ विशेष श्रेणियों को छूट देनेवाले वर्तमान ढांचे की पुनः समीक्षा; (iv) किसी एक समूह के भीतर एक से अधिक एनबीएफसी के लिए और विनिर्माण एवं औद्योगिक घरानों द्वारा निर्मित कैपिटल एनबीएफसी के लिए नीति का निर्माण; (v) एनबीएफसी के विनियमन को बैंकों की सर्वोत्तम विनियामक परिपाटी के समरूप लाने की आवश्यकता पर विचार; (vi) एनबीएफसी के लिए व्यापक 'डिस्कलोजर मानदंड' की सिफारिश; (vii) एनबीएफसी-एनडी-एसआई के बोर्ड में स्वतंत्र निदेशकों के लिए व्यावसायिक अर्हता निर्धारित करने की आवश्यकता पर विचार; (viii) एक या अलग-अलग प्रकार की एनबीएफसी की आस्तियों की निगरानी करने की आवश्यकता पर विचार; (ix) एनबीएफसी के आकार और अन्य संस्थाओं के साथ उनकी अंतर्संबद्धता को ध्यान में रखते हुए उनके पर्यवेक्षण की आवश्यकता और गंभीरता के मद्देनजर नीतियां बनाना।

इस रिपोर्ट को जनता की टिप्पणियों के लिए 23 अगस्त 2011 को रिजर्व बैंक की वेबसाइट पर रखा गया। इस कार्यदल की महत्वपूर्ण सिफारिशें इस प्रकार हैं :

(i) जब तक भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम में संशोधन नहीं हो जाता है, तब तक रिजर्व बैंक के पास पंजीकरण के लिए लंबित सभी नए एनबीएफसी के लिए न्यूनतम निवल स्वाधिकृत निधि आवश्यकता वर्तमान 2 करोड़ रुपए ही रखी जाए। तथापि, रिजर्व बैंक किसी नए एनबीएफसी के पंजीकरण में न्यूनतम 50 करोड़ रुपए से अधिक आस्ति आकार होने पर जोर दे सकता है। वर्तमान में ऐसे एनबीएफसी जो इस सीमा से नीचे हैं, उनका पंजीकरण समाप्त हो सकता है या उन्हें दो वर्ष पूरे होने पर नए पंजीकरण प्रमाणपत्र लेने के लिए कहा जा सकता है;

(ii) जनता से जमाराशि नहीं लेनेवाली एनबीएफसी को पंजीकरण से छूट दी जा सकती है बशर्ते उनकी आस्ति 1000 करोड़ रुपए से कम हो;

(iii) किसी पंजीकृत एनबीएफसी की शेयरधारिता में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 25 प्रतिशत या इससे अधिक के हस्तांतरण, नियंत्रण में परिवर्तन, विलयन या अधिग्रहण में रिजर्व बैंक की पूर्व अनुमति होनी चाहिए;

(iv) किसी एनबीएफसी के मुख्य कारोबार का निर्धारण करने में आस्ति और आय दोनों मानदंडों को बढ़ाकर क्रमशः आस्तियों का 75 प्रतिशत तथा आय का 75 प्रतिशत किया जाए। मुख्य कारोबार संबंधी संशोधित मानदंड को पूरा करने के लिए तीन वर्ष की अवधि दी जा सकती है;

(v) सभी पंजीकृत जमाराशि स्वीकार करने वाली और जमाराशि स्वीकार न करनेवाली एनबीएफसी के लिए यह निर्दिष्ट किया जाए कि वे तीन वर्ष में सीआरएआर (जोखिम धारित आस्ति की तुलना में पूंजी अनुपात) के प्रयोजन से 12 प्रतिशत टियर I पूंजी का लक्ष्य प्राप्त करें;

(vi) सभी पंजीकृत एनबीएफसी के लिए चलनिधि अनुपात की शुरुआत इस रूप में की जा सकती है कि यदि पहले 30 दिनों में उनके संचयी बहिर्प्रवाह और संचयी

अंतर्प्रवाह में कोई अंतर होता है तब नकदी, बैंक बैलेंस और धारित सरकारी प्रतिभूतियां पूरी तरह उसकी भरपाई कर दें;

(vii) बैंकों पर लागू आस्ति वर्गीकरण और प्रावधानीकरण मानदंड चरणबद्ध तरीके से एनबीएफसी पर भी लागू किया जाए। बैंकों की ही भांति, विनियमन के तहत किए गए प्रावधानों पर, उपयुक्त आयकर कटौती की अनुमति दी जा सकती है। बैंकों पर लागू लेखांकन मानदंडों को एनबीएफसी पर भी लागू किया जाए;

(viii) एनबीएफसी जब शेयर ब्रोकरों और मर्चेन्ट बैंकों को उधार देते हैं, तब उन पर बैंकों के समान विनियमन लागू किया जाए और जब वे मार्जिन वित्तपोषण का काम करते हैं, तब उन पर वैसे ही विनियमन लागू किए जाएं जैसा कि भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) ने शेयर ब्रोकरों के लिए निर्दिष्ट किया है;

(ix) बड़े एनबीएफसी जिनके समूह में शेयर ब्रोकर और मर्चेन्ट बैंक होते हैं उनके पर्यवेक्षण के लिए वित्तीय संगुट दृष्टिकोण अपनाया जाए;

(x) सरकारी स्वामित्व वाली संस्थाएं जो एनबीएफसी के लिए योग्य पाई गई हैं, वे शीघ्र अति शीघ्र एनबीएफसी पर लागू विनियामक ढांचे का पालन करें;

(xi) यदि किसी बैंक में समूह कोई एनबीएफसी शामिल है, तो रीयल इस्टेट के प्रति बैंक के एक्सपोजर की बोर्ड अनुमत सीमा को पूरे बैंक समूह पर लागू किया जाए। ऐसे एनबीएफसी जो बैंकों द्वारा प्रायोजित नहीं किए गए हैं या जिनके समूह में कोई बैंक नहीं है, उनके पूंजी बाजार एक्सपोजर (सीएमई) और वाणिज्यिक रीयल इस्टेट (सीआरई) एक्सपोजर के लिए जोखिम भार को बढ़ाकर क्रमशः 150 प्रतिशत और 125 प्रतिशत किया जाए। बैंक प्रायोजित एनबीएफसी के मामले में, सीएमई और सीआरई के लिए जोखिम भार वैसे ही रखा जा सकता है जैसा कि बैंकों के लिए निर्धारित किया गया है;

(xii) कैपिटल एनबीएफसी जिनके कारोबारी स्वरूप का मुख्य ध्येय (90 प्रतिशत या इससे अधिक) मूल कंपनी के उत्पादों का वित्तपोषण करना है, वे पंजीकरण के समय से 12 प्रतिशत टियर I पूंजी बनाए रख सकते हैं। ऐसी कंपनियों के पर्यवेक्षी जोखिम का आकलन करते समय मूल कंपनी के जोखिम पर भी ध्यान दिया जाए;

(xiii) पंजीकरण और पर्यवेक्षण के प्रयोजन से 100 करोड़ रुपए की कट ऑफ सीमा का निर्धारण करने में किसी एक समूह की सभी एनबीएफसी की कुल आस्तियों को एक साथ लिया जाए;

(xiv) 100 करोड़ रुपए और इससे अधिक आस्तिवाली सभी एनबीएफसी के लिए, चाहे वे सूचीबद्ध हों या न हों, सेबी लिसिंग एग्रीमेंट के खंड 49 के तहत अनिवार्य प्रकटीकरण का अनुपालन जल्दी किया जाए।

(xv) 100 करोड़ रुपए और इससे अधिक आस्ति वाले एनबीएफसी के प्रकटीकरण में निम्नलिखित को शामिल किया जाए: प्रावधान कवरेज अनुपात, चलनिधि अनुपात, आस्ति देयता प्रोफाइल, मूल कंपनी के उत्पादों के वित्तपोषण की सीमा, अनर्जक आस्तियों में घट-बढ़, तुलनपत्र से इतर एक्सपोजर, संरचनागत उत्पाद और प्रतिभूतिकरण/समनुदेशन।

(xvi) 1,000 करोड़ रुपए और इससे अधिक आस्तिवाली एनबीएफसी का वार्षिक आधार पर व्यापक रूप से निरीक्षण किया जाए और वे वार्षिक स्ट्रेस टेस्ट के अधीन हों ताकि उनकी नाजुकता का आकलन किया जा सके।

4. प्राथमिक व्यापारी

6.50 30 जून 2011 की स्थिति के अनुसार, 21 प्राथमिक व्यापारी (पीडी) थे जिनमें से 13 बैंक थे जो विभागीय तौर पर प्राथमिक

व्यापारी संबंधी कारोबार कर रहे थे (बैंक पीडी) तथा शेष आठ बैंकेतर संस्थाएं थीं, जिन्हें स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारी के रूप में जाना जाता है, और जो भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की

सारणी VI.40: सार्वजनिक निधियों पर निर्भरता

(31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार)

(कंपनियों की संख्या)

निर्भरता (कुल देयताओं की तुलना में प्रतिशत)	स्वाधिकृत निधि	बैंक	डिबेंचर	अंतर-कंपनी जमाराशियां	वाणिज्यिक पत्र
1	2	3	4	5	6
0 प्रतिशत	0	179	187	182	216
0 से 20 प्रतिशत	46	30	35	49	23
20 से 40 प्रतिशत	47	24	18	10	8
40 से 60 प्रतिशत	27	15	9	7	3
60 से 80 प्रतिशत	29	5	4	2	3
80 से 100 प्रतिशत	104	0	0	3	0
कुल रिपोर्टिंग कंपनियां	253	253	253	253	253

धारा 45 आईएके अंतर्गत एनबीएफसी के रूप में पंजीकृत हैं। अप्रैल 2011 में, गोल्डमैन सैक्स (इंडिया) कैपिटल मार्केट्स प्राइवेट लिमिटेड को स्टैंडएलोन आधार पर पीडी संबंधी कारोबार करने के लिए प्राधिकार दिया गया। इसके अलावा, आईडीबीआई गिल्ट्स लिमिटेड के अपनी मूल कंपनी में विलय के अनुसरण में, अप्रैल 2011 से आईडीबीआई बैंक लिमिटेड को विभागीय तौर पर पीडी कारोबार करने के लिए प्राधिकृत किया गया।

प्राथमिक व्यापारियों का परिचालन और कार्यनिष्पादन

6.51 वर्ष 2010-11 के दौरान, खजाना बिलों (टी-बिल) की नीलामी में प्राथमिक व्यापारियों ने 3,66,320 करोड़ रुपए की अपनी बोली संबंधी वचनबद्धता की तुलना में सामूहिक तौर पर (बैंक-पीडी सहित) 6,87,416 करोड़ रुपए की वास्तविक बोली लगायी। वर्ष के दौरान सफलता अनुपात, अर्थात्, प्राथमिक व्यापारियों की कुल वचनबद्धता में उनकी स्वीकृत बोलियों की कुल राशि का अनुपात बढ़कर 62 प्रतिशत हो गया, जबकि 2009-10 में यह 56 प्रतिशत था। नकदी प्रबंधन बिलों (सीएमबी) की नीलामी में, 12,000 करोड़ रुपए की कुल अधिसूचित राशि की तुलना में प्राथमिक व्यापारियों ने 38,495 करोड़ रुपए की बोली लगाई जिसमें से पीडी की कुल

सारणी VI.41: एनबीएफसी-एनडी-एसआई की पूंजी पर्याप्तता अनुपात

(31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार)

(कंपनियों की संख्या)

सीआरएआर का दायरा	आ.वि.कं.	बु.वि.कं.	नि.कं.	ऋ.कं.	कुल
1	2	3	4	5	6
12 प्रतिशत से कम	-	-	4	2	6
12 प्रतिशत से अधिक और					
15 प्रतिशत तक	-	-	3	1	4
15 प्रतिशत से अधिक और					
20 प्रतिशत तक	7	1	3	22	33
20 प्रतिशत से अधिक और					
30 प्रतिशत तक	4	1	9	19	33
30 प्रतिशत से अधिक	4	1	127	66	198
कुल	15	3	146	110	274

टिप्पणी: आ.वि.कं.- आस्टि वित्त कंपनियां; बु.वि.कं.-बुनियादी ढांचा वित्त कंपनियां; नि.कं.- निवेश कंपनियां; ऋ.कं.- ऋण कंपनियां

स्रोत : वार्षिक विवरणियां।

बोलियों का 68.1 प्रतिशत स्वीकार किया गया। प्राथमिक व्यापारियों के लिए छमाही आधार पर खजाना बिलों और सीएमबी को मिलाकर न्यूनतम 40 प्रतिशत सफलता अनुपात प्राप्त करना आवश्यक है। सभी प्राथमिक व्यापारियों ने 2010-11 की पहली और दूसरी छमाहियों में निर्धारित सफलता अनुपात प्राप्त कर लिया।

6.52 वर्ष 2010-11 के दौरान, भारत सरकार ने बाजार उधारी कार्यक्रम के तहत 4,37,000 करोड़ रुपए की दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियां जारी किया। प्राथमिक व्यापारी (बैंक -पीडी सहित) 4,37,000 करोड़ रुपए की अधिसूचित राशि की तुलना में 7,97,545 करोड़ रुपए राशि की दिनांकित सरकारी - प्रतिभूतियों की हामीदारी के लिए तैयार हुए। दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियों की नीलामी में, प्राथमिक व्यापारियों का हिस्सा (जारी प्रतिभूतियों के अनुपात में स्वीकृत बोलियां) 2010-11 में बढ़कर 49.6 प्रतिशत हो गया, जबकि 2009-10 में यह 42.0 प्रतिशत था (डिवाॅल्वमेंट छोड़कर) (सारणी VI.43)। वर्ष 2010-11 के दौरान प्राथमिक व्यापारियों पर 6 बार 5,772.7 करोड़ रुपए की राशि का आंशिक

सारणी VI.42: एनबीएफसी -एनडी - एसआई का बैंक एक्सपोजर

(31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार)

(राशि करोड़ रुपए में)

बैंक समूह	मीयादी ऋण	कार्यकारी पूंजी ऋण	डिबेंचर/वाणिज्यिक पत्र	अन्य	जोड़
1	2	3	4	5	6
क. राष्ट्रीयकृत बैंक	74,806	14,233	4,519	312	93,870
ख. स्टेट बैंक समूह	8,634	5,089	1,120	25	14,868
ग. पुराने प्राइवेट बैंक	4,892	1,081	653	85	6,712
घ. नए प्राइवेट बैंक	23,076	6,541	3,463	370	33,450
ड विदेशी बैंक	6,947	1,958	995	725	10,625
सभी बैंक	1,18,356	28,902	10,750	1,517	1,59,525

स्रोत: मासिक विवरणियां।

सारणी VI.43 : प्राथमिक बाजार में प्राथमिक व्यापारियों का कार्य-निष्पादन
(मार्च के अंत में)

		(राशि करोड़ रुपए में)	
		2010	2011
1	2	3	
खजाना बिल			
अधिसूचित राशि	3,80,000	3,04,000	
बोली वचनबद्धता	4,17,060	3,66,320	
वास्तविक प्रस्तुत बोलियां	7,54,041	6,87,416	
कवर की तुलना में बोलियों का अनुपात	2.0	2.3	
स्वीकृत बोलियां	2,33,648	2,27,104	
सफलता अनुपात (प्रतिशत में)	56.0	62.0	
केंद्र सरकार की प्रतिभूतियां			
अधिसूचित राशि	4,18,000	4,37,000	
वास्तविक प्रस्तुत बोलियां	5,35,722	6,23,939	
कवर की तुलना में बोलियों का अनुपात	1.3	1.4	
स्वीकृत बोली	1,75,609	2,16,535	
पीडी का हिस्सा (प्रतिशत में)	42.0	49.6	

डिवाॅल्वमेंट हुआ, जबकि 2009-10 में 18 बार 7,219.2 करोड़ रुपए का डिवाॅल्वमेंट हुआ था।

स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का कार्यनिष्पादन

6.53 वर्ष 2010-11 के दौरान, द्वितीयक सरकारी प्रतिभूति बाजार में, बाजार प्रतिभागियों के कुल टर्नओवर की तुलना में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के टर्नओवर का हिस्सा एकमुश्त लेन-देन के मामले में 15.9 प्रतिशत से बढ़कर 19 प्रतिशत और रेपो लेन-देन के मामले में 7 प्रतिशत से बढ़कर 14 प्रतिशत हो गया। स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का समग्र हिस्सा 8.7 प्रतिशत से बढ़कर 16 प्रतिशत हो गया (सारणी VI.44)।

स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों की निधियों का स्रोत तथा उपयोग

6.54 वर्ष 2010-11 के दौरान, आईडीबीआई गिल्ट्स लिमिटेड और नॉमुरा फिक्सड इन्कम सिक्युरिटीज लिमिटेड ने नई पूंजी डाली। तथापि, एसबीआई डीएफएचआई लिमिटेड द्वारा अपनी पूंजी की आंशिक वापसी-खरीद के चलते, पीडी के आरक्षित निधि और अधिशेष को मिलाकर इनकी पूंजी में थोड़ी गिरावट हुई। एक ओर पीडी के बेजमानती ऋण में 24 प्रतिशत की गिरावट हुई, वहीं दूसरी ओर इनके जमानती ऋण में 152 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

6.55 निधि के उपयोग के मामले में, वर्ष 2010-11 में सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि 2009-10

सारणी VI.44 : द्वितीयक बाजार में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का कार्य-निष्पादन
(मार्च के अंत में)

		(राशि करोड़ रुपए में)	
		2010	2011
1	2	3	
एकमुश्त			
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्न ओवर	9,02,093	10,89,956	
बाजार का टर्न ओवर	56,84,838	57,41,904	
प्राथमिक व्यापारी का हिस्सा (प्रतिशत)	15.9	19.0	
रिपो			
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्न ओवर	17,00,382	11,45,970	
बाजार का टर्न ओवर	2,41,83,229	81,98,568	
प्राथमिक व्यापारी का हिस्सा (प्रतिशत)	7.0	14.0	
कुल			
स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का टर्न ओवर	26,02,475	22,35,926	
बाजार का टर्न ओवर	2,98,68,067	1,39,40,472	
प्राथमिक व्यापारी का हिस्सा (प्रतिशत)	8.7	16.0	
स्रोत: सीसीआईएल।			

में इसमें 14 प्रतिशत की गिरावट हुई थी। तथापि, कंपनी बांडों में निवेश में 2009-10 के 77 प्रतिशत की तुलना में 32 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी VI.45)।

स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का वित्तीय कार्यनिष्पादन

6.56 वर्ष 2010-11 में ट्रेडिंग आय में सुधार होने के बावजूद, प्राथमिक व्यापारियों के निवल लाभ में लगभग 22 प्रतिशत की गिरावट हुई और ऐसा मुख्य रूप से उनके ब्याज व्यय में वृद्धि और अन्य आय में आई गिरावट की वजह से हुआ। वर्ष के दौरान सरकारी प्रतिभूतियों पर प्रतिफल बढ़ने से स्टैंडएलोन पीडी के खजाना लाभ पर असर पड़ा (सारणी VI.46 और परिशिष्ट सारणी VI.2)।

6.57 कुल मिलाकर, निवल लाभ में 22 प्रतिशत की गिरावट के चलते आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) 2009-10 के 1.8 प्रतिशत से घटकर 2010-11 में 1.1 प्रतिशत हो गया, जबकि औसत आस्तियों में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी VI.47)। स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के पूंजी का समूह अच्छा बना रहा। अलग-अलग स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का सीआरएआर मार्च 2011 के अंत में निर्धारित न्यूनतम 15 प्रतिशत से अधिक बना रहा। एक समूह के रूप में स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का सीआरएआर मार्च 2011 के अंत 46.2 प्रतिशत रहा। (सारणी VI.48 और परिशिष्ट सारणी VI.3)। मार्च 2011 के अंत में, प्राथमिक व्यापारियों के कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में उनके द्वारा धारित सरकारी प्रतिभूतियां बढ़कर 66 प्रतिशत हो गईं, जबकि पिछले वर्ष यह 61 प्रतिशत थीं (सारणी VI.49)।

सारणी VI.45: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों की निधियों के स्रोत और उपयोग

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में			प्रतिशत घट-बढ़	
	2009	2010	2011	2010	2011
1	2	3	4	5	6
निधियों के स्रोत	10,307	10,308	13,030	0.01	26.40
1 पूंजी	1,121	1,541	1,521	37.47	-1.30
2 आरक्षित निधि और अधिशेष	2,213	1,925	1,886	-13.01	-2.01
3 ऋण (क+ख)	6,973	6,842	9,622	-1.88	40.64
क) जमानती	2,945	2,522	6,352	-14.36	151.85
ख) बेजमानती	4,028	4,320	3,271	7.25	-24.29
निधियों का उपयोग	10,307	10,308	13,030	0.01	26.40
1 अचल आस्तियां	13	14	38	7.69	169.86
2 निवेश (क से ग)	7,891	7,280	9,817	-7.74	34.86
क) सरकारी प्रतिभूतियां	7,305	6,258	8,648	-14.33	38.19
ख) वाणिज्यिक पत्र	88	142	10	61.36	-93.08
ग) कंपनी बॉण्ड	498	880	1,160	76.71	31.76
3 ऋण और अग्रिम	959	741	429	-22.73	-42.12
4 गैर-चालू आस्तियां	0	0	0		
5 ईक्विटी, म्यूच्युअल फंड आदि	22	68	25	209.09	-63.59
6 अन्य *	1,422	2,205	2,721	55.07	23.38

*: अन्य में नकदी + सीडी + बैंक शेष + उपचित ब्याज + आस्थिगत कर अस्तियां - चालू देयताएं और प्रावधान शामिल हैं।

स्रोत : प्राथमिक व्यापारियों के वार्षिक रिपोर्ट।

5. निष्कर्ष

6.58 वित्तीय संस्थाओं ने वर्ष 2010-11 में पिछले वर्ष के मुकाबले काफी अधिक संसाधन जुटाए। संसाधन जुटाने वाले सभी घटकों, अल्पावधि, दीर्घावधि और विदेशी मुद्रा संसाधनों में तेज वृद्धि देखी गई। तथापि, रुपया संसाधनों की औसत भारित लागत हर स्तर पर बढ़ गई। वर्ष 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं के परिचालन लाभ और निवल लाभ में आई कमी की वजह से उनके वित्तीय निष्पादन में गिरावट हुई। वर्ष के दौरान मुख्यतः वेतन

संशोधन के चलते उनके परिचालन व्यय में काफी तेज वृद्धि हुई। 2010-11 में वित्तीय संस्थाओं की निवल अनर्जक आस्तियों की राशि में वृद्धि हुई। सभी वित्तीय संस्थाओं का सीआरएआर 9 प्रतिशत के निर्धारित मानदंड से ऊपर बना रहा जो इस बात का संकेत था कि आगे ऋण के विस्तार के लिए पूंजी के उपयोग की गुंजाइश है।

6.59 2010-11 में एनबीएफसी-डी के वित्तीय कार्यनिष्पादन में सुधार हुआ जैसा कि उनकी कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ के अनुपात में हुई वृद्धि से प्रतिबिंबित होता है। एनबीएफसी-डी की अनर्जक आस्तियों के तीनों प्रकार जैसे अवमानक, संदिग्ध और हानि वाली आस्तियों के हिस्से में आई गिरावट उनकी आस्ति गुणवत्ता में हुए सुधार को रेखांकित करती है। अधिकांश एनबीएफसी-डी का सीआरएआर 15 प्रतिशत से अधिक था जो इस क्षेत्र में हो रहे समेकन प्रक्रिया का प्रतीक है। एनबीएफसी-डी के तुलन पत्र का आकार बढ़

सारणी VI.46: स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का वित्तीय कार्य-निष्पादन

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	2009-10	2010-11	2009-10 की तुलना में घट-बढ़	
			राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5
क. आय (i + ii + iii)	804	1,079	275	25.5
i) ब्याज और बट्टा	690	970	280	28.8
ii) कारोबारी लाभ	-30	58	88	151.9
iii) अन्य आय	144	51	-93	-181.3
ख. व्यय (i + ii)	452	811	359	44.3
i) ब्याज	302	653	351	53.8
ii) प्रशासनिक लागत	150	158	8	4.9
कर पूर्व लाभ	343	272	-71	-26.2
करोत्तर लाभ	227	178	-49	-27.4

स्रोत: प्राथमिक व्यापारियों के वार्षिक रिपोर्ट।

सारणी VI.47: प्राथमिक व्यापारियों के वित्तीय संकेतक

(राशि करोड़ रुपए में)

संकेतक	2009-10	2010-11
1	2	3
i) निवल लाभ	227	178
ii) औसत आस्तियां	12,815	16,697
iii) औसत आस्तियों पर प्रतिलाभ (प्रतिशत में)	1.8	1.1

स्रोत: प्राथमिक व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

सारणी VI.48 : स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों का सीआरएआर
(मार्च के अंत में)

विवरण	(राशि करोड़ रुपए में)	
	2010	2011
1	2	3
1. कुल निवल पूंजीगत निधि	3,610	3,626
2. कुल जोखिम भारित आस्तियां	8,308	7,858
क) क्रेडिट जोखिम	2,803	3,350
ख) बाजार जोखिम	5,505	4,508
3. सीआरएआर (प्रतिशत)	43.5	46.2

स्रोत: प्राथमिक व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

गया। आस्ति पक्ष में, ऋण और अग्रिम सबसे बड़े स्रोत बने रहे जिसके बाद निवेश का स्थान था। दो वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक की परिपक्वता अवधि वाले जमाराशियों के हिस्से में वृद्धि हुई। एनबीएफसी-डी क्षेत्र की कुल आस्तियों में आस्ति वित्त कंपनियों का हिस्सा दो-तिहाई से अधिक था।

6.60 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र के वित्तीय कार्यानिष्पादन में भी काफी सुधार हुआ जैसा कि इनके निवले लाभ में हुई वृद्धि से प्रतिबिंबित होता है। लेकिन, 2010-11 में, कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ के अनुपात में कोई बदलाव नहीं हुआ। यह क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है और मुख्य रूप से बैंकों / वित्तीय संस्थाओं से मिलने वाला उधार इनकी निधि के सबसे बड़े स्रोत हैं। इस प्रकार, इनमें प्रणालीगत वित्तीय अंतर्संबद्धता है जिसकी गंभीरतापूर्वक निगरानी करने की

सारणी VI.49 : प्राथमिक व्यापारियों के चुनिंदा संकेतक
(मार्च के अंत में)

मद	(राशि करोड़ रुपए में)	
	2010	2011
1	2	3
कुल आस्तियां	10,308	13,030
इनमें से : सरकारी प्रतिभूतियां	6,258	8,648
कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में		
सरकारी प्रतिभूतियां	61	66
चलनिधि समर्थन सीमा	3,000	3,000

स्रोत: प्राथमिक व्यापारियों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

जरूरत है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इससे प्रणाली को किसी प्रकार जोखिम नहीं है।

6.61 वर्ष 2010-11 में मुख्यतः प्राथमिक व्यापारियों के ब्याज व्यय में हुई अनुपात से अधिक वृद्धि और अन्य आय हुई में कमी के चलते उनके निवल लाभ में गिरावट दर्ज हुई। सरकारी प्रतिभूतियों पर प्रतिफल से बढ़ने से स्टैंडएलोन प्राथमिक व्यापारियों के लाभ पर असर पड़ा।

6.62 एनबीएफसी क्षेत्र की वर्तमान विनियामक खामी, आस्ति में तेज वृद्धि और वित्तीय क्षेत्र में अंतर्संबद्धता के फैलाव के चलते जोखिम की धारणा में लगातार हो रहे बदलाव को प्रतिफलित करने के प्रयोजन से इस क्षेत्र से संबंधित वर्तमान पर्यवेक्षी ढांचे में सुधार करने की जरूरत है।